कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत कृषि अखबार

"Registered" Postal Regn. No.MP/Bhopal/4-150/2026-28 RNI No.-CHHHIN/2002/10910, डाक प्रेषण का दिन - मंगलवार, बुधवार

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर

ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 रायपुर, प्रकाशन - सोमवार 2 फरवरी 2026 वर्ष-24 अंक- 22 मूल्य रु. 12/- कुल पृष्ठ - 12 www.krishakjagat.org पृष्ठ -1

कृषक जगत न्यूज़ वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

श्रेष्ठ कृषि पत्रकारिता के लिए भाकृअनुप ICAR चौधरी चरणसिंह अवार्ड से पुरस्कृत

अंदर पढ़िये...

5

फसल में सल्फर का महत्व

6

संतरे की उन्नत खेती

केन्द्रीय बजट 2026-27 में

कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र के लिए 1 लाख 62 हजार करोड़ से अधिक का प्रावधान

नई दिल्ली। केंद्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट कार्य मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने संसद में केंद्रीय बजट 2026-27 पेश करते हुए कहा कि बजट में उभरती प्रौद्योगिकियों को और एआई को आम नागरिक की आकांक्षाओं को पूरा करने और भारत की समृद्धि के पथ पर उन्हें सशक्त प्रतिभागी बनाने के लिए तथा उनके क्षमता निर्माण को मुख्य घटक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। केन्द्रीय बजट 2026-27 एआई मिशन, नेशनल क्वांटम मिशन, अनुसंधान नेशनल रिसर्च फंड और अनुसंधान विकास एवं नवाचार निधि के माध्यम से नई प्रौद्योगिकियों को सहायता प्रदान करना, सरकार की मुख्य पहल है। बजट में कृषि और संबद्ध क्षेत्रों के लिए रु. 1,62,671 करोड़ का प्रावधान किया गया है, जो मुख्य रूप से उच्च-मूल्य वाली फसलों (नारियल, काजू, चंदन), तकनीकी विकास, और डिजिटल खेती (AI-आधारित 'भारत विस्तार') पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य किसानों की आय बढ़ाना और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर बनाना है। निरंतर...

बजट 2026-27 के मुख्य कृषि आकर्षण

कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र : कृषि और इससे जुड़े क्षेत्रों के लिए रु. 1,62,671 करोड़ आवंटित, जबकि ग्रामीण विकास के लिए रु. 2,73,108 करोड़ रखे गए हैं।

उच्च-मूल्य वाली फसलें : कोकोनट, काजू, चंदन और कोको जैसी फसलों को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहन।

डिजिटल कृषि (भारत विस्तार) : एआई आधारित 'भारत विस्तार' सिस्टम से किसानों को सही समय पर, अपनी भाषा में, और सही जानकारी मिलेगी (रु. 150 करोड़ का आवंटन)।

फसल विविधीकरण : नकदी फसलों की ओर जाने पर जोर।

मत्स्य पालन एवं पशुपालन : समुद्री तटीय क्षेत्रों में मत्स्य पालन श्रृंखला और पशुपालन में निवेश को बढ़ावा।

अमृत सरोवर : पानी के भंडारण के लिए 500 जलाशयों का विकास किया जाएगा।

पीएम-किसान, फसल बीमा योजना, और सिंचाई योजनाओं के लिए आवंटन जारी रहेगा।

भारत-यूरोपियन यूनियन में समझौता

किसानों, कृषि उत्पादों के लिए खुलेंगे नए अवसरों के द्वार : श्री चौहान

नई दिल्ली (कृषक जगत)। केंद्रीय कृषि और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने रायपुर में भारत और यूरोपियन यूनियन के बीच हुए फ्री ट्रेड एग्रीमेंट पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि यह समझौता केवल एक व्यापारिक करार नहीं, बल्कि भारत के बढ़ते वैश्विक नेतृत्व और आर्थिक सामर्थ्य का प्रतीक है।

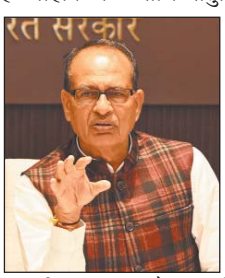

उन्होंने कहा कि भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौता एक ऐतिहासिक मील का पत्थर है, जो भारत-यूरोपीय संघ साझेदारी को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगा। भारत के लिए महत्वपूर्ण कृषि उत्पाद-जैसे चाय, कॉफी, मसाले, टेबल अंगूर, खीरा और अचार वाली खीरा, सूखे प्याज, मीठा मक्का, चुनिंदा फल-सब्जियां और प्रोसेस्ड फूड को इस समझौते से बड़ा लाभ होगा। प्रमुख क्षेत्रों में आपसी संवेदनशीलता का सम्मान करते हुए यह समझौता निर्यात वृद्धि को घरेलू प्राथमिकताओं के साथ संतुलित करता है और दोनों पक्षों के किसान समुदायों के लिए लाभ सुनिश्चित करता है। भारतीय कृषि के लिए यह एक बड़ा कदम है। उन्होंने कहा कि यह समझौता भारतीय किसानों, कृषि उत्पादों और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए नए अवसरों के द्वार खोलेगा। भारत की कृषि शक्ति आज विश्व के सामने है-भारत चावल उत्पादन में पहले स्थान पर पहुंच चुका है और हमारी कृषि विकास दर ने हरित क्रांति के दौर को भी पीछे छोड़ दिया है। फ्री ट्रेड एग्रीमेंट पर विस्तार से बात करते हुए श्री चौहान ने कहा कि भारत-यूरोपियन यूनियन के बीच हुआ यह समझौता कृषि, खाद्य प्रसंस्करण, निर्यात और निवेश के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करेगा। इससे भारतीय कृषि उत्पादों को यूरोपीय बाजारों में बेहतर पहुंच मिलेगी, किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य मिलेगा।

खेती की अधिक जानकारी के लिए देखें
www.krishakjagat.org

केन्द्रीय बजट तीन कर्तव्यों से प्रेरित

__पहला कर्तव्य__ - उत्पादकता और प्रतिस्पर्धा बढ़ाने तथा वैश्विक उथल-पुथल के परिदृश्य में लचीलापन लाकर आर्थिक विकास को तेज करना और उसकी गति बनाए रखना

__दूसरा कर्तव्य__- भारत की समृद्धि के पथ में सशक्त साझेदार बनाने के लिए लोगों की आकांक्षाएं पूरी करना और उनकी क्षमता बढ़ाना।

__तीसरा कर्तव्य__ - सरकार की सबका साथ, सबका विकास के दृष्टिकोण के अनुकूल- यह सुनिश्चित करना कि सार्थक भागीदारी के लिए प्रत्येक परिवार, समुदाय और क्षेत्र की संसाधनों, सुविधाओं और अवसरों तक पहुंच उपलब्ध हो।

काजू, कोको के लिए बनेंगे कार्यक्रम

वित्त मंत्री ने कहा कि तटीय इलाकों में नारियल, चंदन, काजू जैसी फसलों को सहायता दी जाएगी। नारियल उत्पादन में प्रतिस्पर्धा बढ़ाने के लिए नारियल संवर्धन योजना लाई जाएगी। उन्होंने आगे कहा कि भारतीय काजू और कोको के लिए समर्पित कार्यक्रम लाए जाएंगे। इन्हें वैश्विक ब्रांड बनाने का काम किया जाएगा। भारतीय चंदन लकड़ी की गरिमा को पुनर्स्थापित करने के लिए राज्यों से सहयोग किया जाएगा। वहीं अखरोट, बादाम की पैदावार बढ़ाने के लिए भी विशेष कार्यक्रम शुरू होगा।

भारत-VISTAAR कार्यक्रम शुरू होगा

वित्त मंत्री ने बताया कि एआई टूल- भारत-विस्तार कार्यक्रम की शुरुआत होगी। यह बहुभाषी एआई टूल किसानों को बेहतर फैसले लेने में मदद करेगा, जिससे उनकी उत्पादकता बढ़ेगी। उन्होंने यह भी बताया कि ग्रामीण महिलाओं की अगुवाई वाले उद्यमों के लिए स्व-सहायता उद्यम (SHE-Marts) शुरू किए जाएंगे।

सहकारिता

दूध, तिलहन, फल या सब्जियों की आपूर्ति में लगी प्राथमिक सहकारी संस्थाओं को पहले से उपलब्ध कटौती का विस्तार अब पशुचारे और बिनौले की आपूर्ति करने वालों तक भी किया गया है। किसी अधिसूचित राष्ट्रीय सहकारी संघ द्वारा दिनांक 31 जनवरी 2026 तक कंपनियों में दिए गए उनके निवेश पर प्राप्त लाभांश आय पर तीन वर्ष की अवधि के लिए छूट देने का प्रस्ताव।

पशुपालन के लिए लोन-आधारित सब्सिडी

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बताया कि स्टार्टअप और महिलाओं की अगुवाई वाले समूह बाजार से जुड़ेंगे। जबकि पशुपालन क्षेत्र के लिए लोन-आधारित सब्सिडी कार्यक्रम शुरू होंगे।

पशुधन उद्यमों का संवर्धन और आधुनिकीकरण होगा। पशुधन किसान उत्पादक संगठनों को बढ़ावा दिया जाएगा। सरकार 20 हजार से अधिक पशु डॉक्टरों की उपलब्धता करेगी। निजी क्षेत्र में पशु रोग विशेषज्ञ और पैरा पशु शल्य महाविद्यालय, पशु अस्पताल, प्रयोगशालाओं और प्रजनन सुविधाओं के लिए ऋण संबद्ध पूंजी सब्सिडी सहायता योजना शुरू करने का प्रस्ताव।

सिंचाई पर भी ध्यान

सिंचाई पर भी ध्यान दिया गया है, क्योंकि अच्छी सिंचाई के बिना उच्च मूल्य वाली फसलों की खेती मुश्किल होती है. सरकार पहले से ही पीएम कृषि सिंचाई योजना चला रही है और इस बजट में इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने से पानी की उपलब्धता बढ़ेगी. इससे फसलें बेहतर होंगी और सूखे या बाढ़ का खतरा कम होगा।

ये घोषणाएं किसानों की आय दोगुनी करने के सपने को करीब ला रही हैं। छोटे किसान जो अब तक सिर्फ अनाज या सब्जियां उगाते थे, वे अब हाई-वैल्यू क्रॉप्स में जा सकेंगे। इससे ग्रामीण रोजगार बढ़ेगा, निर्यात बढ़ेगा और अर्थव्यवस्था मजबूत होगी।

विकसित भारत बनाने के बजट में कृषि, दुग्ध उत्पादन और मत्स्य पालन को सरकार ने सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। इस बजट में नारियल, काजू, कोको और चंदन के उत्पादन में लगे किसानों के लिए महत्वपूर्ण उपाय किए गए हैं। भारत विस्तार एआई टूल किसानों को उनकी अपनी भाषा में जानकारी उपलब्ध कराकर उनकी बहुत मदद करेगा।

- नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

यह बजट भारत के सुनहरे और विकसित भविष्य की दिशा में एक ऐतिहासिक दस्तावेज है। कर्तव्य भवन में बना हुआ यह पहला बजट है, जिसमें देश के समग्र विकास और प्रत्येक नागरिक के कल्याण को ध्यान में रखते हुए तीन प्रमुख कर्तव्यों-आर्थिक विकास एवं रोजगार वृद्धि, जनता की अपेक्षाओं की पूर्ति तथा 'सबका साथ, सबका विकास' को केंद्र में रखा गया है। बजट में किसानों की आय बढ़ाने और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त करने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं।

- विष्णुदेव साय, मुख्यमंत्री छ.ग.

कृषि- पशुपालन क्षेत्र के पद्मश्री पुरस्कार विजेता 2026

नई दिल्ली (कृषक जगत)। पद्म पुरस्कार देश के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कारों में से एक हैं, जो तीन श्रेणियों में प्रदान किए जाते हैं- पद्म विभूषण, पद्म भूषण और पद्मश्री। ये पुरस्कार कृषि, कला, सामाजिक कार्य, सार्वजनिक मामलों, विज्ञान और इंजीनियरिंग, व्यापार और उद्योग, चिकित्सा, साहित्य और शिक्षा, खेल, सिविल सेवा आदि विभिन्न क्षेत्रों में दिए जाते हैं। पद्म विभूषण असाधारण और विशिष्ट सेवा के लिए, पद्म भूषण उच्च कोटि की विशिष्ट सेवा के लिए और पद्मश्री किसी भी क्षेत्र में विशिष्ट सेवा के लिए प्रदान किया जाता है। इन पुरस्कारों की घोषणा प्रतिवर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर की जाती है। ये पुरस्कार भारत के राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोहों में प्रदान किए जाते हैं, वर्ष 2026 के लिए, राष्ट्रपति ने 131 पद्म पुरस्कारों के प्रदान करने की स्वीकृति दी है, जिनमें 2 युगल पुरस्कार (युगल पुरस्कार को एक ही माना जाता है) शामिल हैं, सूची में 5 पद्म विभूषण, 13 पद्म भूषण और 113 पद्मश्री पुरस्कार शामिल हैं।

डॉ. ए.के. सिंह : बासमती चावल की 25 उन्नत किस्मों के जनक

चावल और बासमती प्रजनन के क्षेत्र में ऐतिहासिक योगदान के लिए डॉ. ए.के. सिंह को पद्मश्री से सम्मानित किया गया है। वह पादप आनुवांशिकी के विशेषज्ञ हैं और लगभग तीन दशकों तक ICAR-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (IARI) से जुड़े रहे। IARI के पूर्व निदेशक रहे डॉ. सिंह ने बासमती चावल की 25 उन्नत किस्मों के विकास में अहम भूमिका निभाई। उनकी विकसित किस्मों से हर साल करीब 50 हजार करोड़ रुपये का विदेशी मुद्रा राजस्व अर्जित हो रहा है।

डॉ. गोपाल जी त्रिवेदी : लीची उत्पादन में क्रांति

बिहार के डॉ. गोपाल जी त्रिवेदी को पारंपरिक ज्ञान आधारित खेती और कृषि विस्तार सेवाओं में योगदान के लिए पद्मश्री मिला है। उन्होंने लीची के पुराने बागानों में कैनोपी मैनेजमेंट तकनीक को अपनाया, जिससे पेड़ों की उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई और किसानों की आय दोगुनी हो गई। उन्होंने जल-जमाव वाले इलाकों में मखाना और सिंघाड़े की व्यावसायिक खेती को भी बढ़ावा दिया। उनके प्रयासों से बिहार कृषि नवाचारों का महत्वपूर्ण केंद्र बनकर उभरा है।

डॉ. के. रामासामी : टिकाऊ और प्राकृतिक खेती के अग्रदूत

तमिलनाडु के डॉ. के. रामासामी को टिकाऊ खेती और किसान-नेतृत्व वाले नवाचारों के लिए पद्मश्री से सम्मानित किया गया है। उन्होंने कृषि जैव-प्रौद्योगिकी, फर्टी-इरिगेशन, बायोगैस और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने में अहम भूमिका निभाई।

डॉ. रामासामी ने 30 से अधिक अनुसंधान परियोजनाओं का नेतृत्व किया, जिससे वैज्ञानिक शोध सीधे खेतों तक पहुंचा और किसानों को व्यावहारिक लाभ मिला।

डॉ. प्रेम लाल गौतम : पादप आनुवांशिक संसाधनों के संरक्षक

हिमाचल प्रदेश के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. प्रेम लाल गौतम को पादप आनुवांशिकी, फसल सुधार और जैव विविधता संरक्षण के क्षेत्र में योगदान के लिए पद्मश्री मिला है। उन्होंने पौधों के आनुवांशिक संसाधनों के संरक्षण के साथ-साथ भारतीय कृषि शिक्षा और अनुसंधान को नई दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

श्रीरंग देवबा लाड : कपास उत्पादन में 300 प्रतिशत तक बढ़ोतरी

महाराष्ट्र के प्रगतिशील किसान और इनोवेटर श्रीरंग देवबा लाड को कपास खेती में नवाचारों के लिए पद्मश्री से सम्मानित किया गया है। उनकी विकसित 'दादा लाड कपास तकनीक' से बीज कपास की पैदावार में 300 प्रतिशत तक वृद्धि दर्ज की गई। इस तकनीक से हजारों किसानों की आय में 40 प्रतिशत से अधिक का इजाफा हुआ है।

श्री जोगेश देउरी : मूगा रेशम से संवारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था

असम के जोगेश देउरी को जमीनी स्तर पर कृषि और आजीविका सुधार के लिए पद्मश्री मिला है। उन्होंने विश्व-प्रसिद्ध मूगा रेशम के संरक्षण और संवर्धन में अहम योगदान दिया। पारंपरिक रेशम कीट पालन को आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों से जोड़कर उन्होंने हजारों परिवारों के लिए टिकाऊ आजीविका मॉडल तैयार किया।

श्री रघुपत सिंह : खेती-बाड़ी के पंडित (मरणोपरांत)

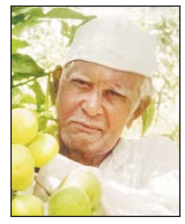

उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले के किसान रघुपत सिंह को मरणोपरांत पद्मश्री से सम्मानित किया गया है। उन्होंने राजमा की 23 उन्नत किस्में विकसित कीं और लगभग विलुप्त हो चुकी 55 से अधिक सब्जियों की किस्मों को फिर से जीवित किया। उनके शोध से करीब 100 नई पौध प्रजातियां सामने आईं, जिनमें 1.5 मीटर लंबी लौकी भी शामिल है।

श्री राम रेड्डी मामिडी : सहकारी समितियों से बदली ग्रामीण आजीविका (मरणोपरांत)

तेलंगाना के राम रेड्डी मामिडी को पशुपालन और दुग्ध उत्पादन से जुड़ी ग्रामीण आजीविका प्रणालियों को मजबूत करने के लिए मरणोपरांत पद्मश्री दिया गया है। उन्होंने सहकारी समितियों के जरिए किसानों को प्रशिक्षण दिया और महिला-नेतृत्व वाली संस्थाओं को सशक्त बनाने पर विशेष जोर दिया।

राजिम छत्तीसगढ़ की आस्था का प्रतीक : श्री डेका

राज्यपाल ने किया राजिम कुंभ का शुभारंभ

रायपुर। त्रिवेणी संगम राजिम के पावन तट पर राजिम में आयोजित राजिम कुंभ कल्प मेला के शुभारंभ अवसर पर राज्यपाल श्री रमेन डेका मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। राज्यपाल श्री डेका, पर्यटन मंत्री राजेश अग्रवाल सहित अतिथियों एवं संत-महात्माओं ने भगवान श्री राजीवलोचन की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर आशीर्वाद प्राप्त किया तथा प्रदेश की सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना की। राज्यपाल श्री डेका ने कहा कि राजिम की यह पावन भूमि, जहां महानदी, पैरी और सोंढूर नदियों का संगम होता है, अत्यंत पुण्य और ऐतिहासिक महत्व रखती है। उन्होंने कहा कि इस पवित्र स्थल पर आयोजित मेला, जिसे श्रद्धालु 'कल्प कुंभ' के नाम से जानते हैं, हमारी समृद्ध सांस्कृतिक एवं धार्मिक धरोहर का प्रतीक है।

राज्यपाल ने कहा कि राजिम कुंभ कल्प के अवसर पर आप सभी के बीच उपस्थित होकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता और गौरव का अनुभव हो रहा है। मुझे छत्तीसगढ़ की पवित्र नगरी राजिम के कुंभ मेला में आकर अत्यंत शांति महसूस होती है। धर्म, आस्था और संस्कृति के इस संगम राजिम कुंभ मेले में देश के विभिन्न प्रांतों से आए साधु-संतों, श्रद्धालुजनों का मैं हार्दिक अभिनंदन करता हूं। मैं कुलेश्वर महादेव तथा राजीव लोचन भगवान, राजिम भक्ति माता से प्रार्थना करता हूं कि हमारे देश और प्रदेश पर अपना आशीर्वाद बनाये रखें जिससे यहां हमेशा सुख-शांति और खुशहाली कायम रहे।

छत्तीसगढ़ के एग्रोक्लाइमेट के अनुरूप बनाएंगे विशेष नीति : श्री चौहान

केन्द्रीय कृषि मंत्री ने की विभागीय समीक्षा

रायपुर। केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि छत्तीसगढ़ को कृषि के क्षेत्र में उन्नत और आत्मनिर्भर बनाने के लिए राज्य सरकार के साथ मिलकर विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। केंद्र सरकार के वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिकों और राज्य सरकार के अधिकारियों की टीम अगले एक हफ्ते में छत्तीसगढ़ के एग्रोक्लाइमेट के अनुरूप विशेष नीति बनाएंगे। बैठक में उप मुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा एवं कृषि मंत्री श्री रामविचार नेताम, मुख्य सचिव श्री विकासशील, मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव श्री सुबोध सिंह, कृषि उत्पादन आयुक्त व सचिव श्रीमती शहला निगार, सहित केन्द्र और राज्य सरकार के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी मौजूद थे।

श्री विष्णु देव साय और केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कृषि विभाग के कामकाज की उच्च स्तरीय समीक्षा उपरांत अधिकारियों को संबोधित करते हुए यह बातें कही। उन्होंने बैठक में यह भी कहा कि प्रदेश में फसल विविधिकरण को बढ़ावा देना है ताकि किसानों की आय बढ़े। साथ ही छोटी जोत के किसानों को कृषि से इतर पशुपालन, मत्स्यपालन, वानिकी जैसे सहायक गतिविधियों को भी बढ़ावा देना है।

केंद्रीय मंत्री श्री सिंह ने कहा कि प्रदेश में रिसर्च की समस्या, वैरायटी की समस्या को दूर किया जाएगा और फसलों के वैविध्य पर काम किया जाएगा। श्री चौहान ने कहा जिस मंशा से मैं यहाँ आया हूँ, वह यह है कि अच्छा काम हो रहा है, लेकिन और बेहतर

करने की अनंत संभावनाएं हैं। अलग-अलग प्रयोग कर कृषि को और सशक्त बनाएंगे। उन्होंने कहा कि अनुसंधान ऐसा होना चाहिए, जिससे सीधे किसानों को लाभ मिले। उन्होंने फॉर्मर प्रोड्यूसर ऑर्गनाइजेशन को मजबूत करने, कृषि यंत्रों के वितरण के फिजिकल वेरिफिकेशन और प्रधानमंत्री धन-धान्य जिला योजना की समीक्षा की। केंद्रीय मंत्री ने छत्तीसगढ़ के कृषि अधिकारियों और सहयोगियों से संवाद कर टीम वर्क के साथ नवाचार पर ज़ोर दिया और कहा कि अच्छा काम करने वालों को सम्मान मिलेगा।

मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने छत्तीसगढ़ में कृषि विकास एवं किसानों के सशक्तिकरण को लेकर केन्द्र एवं राज्य सरकार के योजनाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा की। केन्द्रीय मंत्री चौहान ने कहा कि विविध फसलों के लिए छत्तीसगढ़ में उपयुक्त जलवायु क्षेत्र है। उन्होंने फसल विविधिकरण पर जोर देते हुए यहां के जलवायु के अनुरूप अलग-अलग जिलों व क्षेत्रों में अलग-अलग फसलों को बढ़ावा देने की बात कही।

केन्द्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश के किसानों के आय को बढ़ाने की दिशा में निरंतर सार्थक प्रयास किए जा रहे है। उन्होंने कहा कि आधुनिक कृषि उपकरणों एवं कृषि तकनीकों को अपनाकर नवाचार के साथ खेती करने से फसलों के उत्पादन में वृद्धि होगी, किसान सशक्त होंगे और देश समृद्ध होगा। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ में बेहतर कार्य हो रहे हैं। दलहन-तिलहन सहित बागवानी फसलों के लिए भी राज्य में उपयुक्त जलवायु है। इससे फसल परिवर्तन तथा विविधिकरण से किसानों के आय में वृद्धि होगी।

केन्द्रीय मंत्री श्री चौहान ने पीएम किसान सम्मान निधि योजना, कृषि सिंचाई योजना, मिशन फॉर आत्मनिर्भरता इन पल्सेस योजना, कृषि उन्नति, प्रधानमंत्री जनधन योजना, बागवानी मिशन योजना सहित विभिन्न योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि पीएम सम्मान निधि योजना के तहत पात्र किसानों को शत-प्रतिशत लाभ मिले यह सुनिश्चित किया जाए। उन्होंन पॉम ऑयल और मखाना की खेती को बढ़ावा देने पर जोर दिया।

खरीफ विपणन वर्ष में 23 लाख से अधिक धान किसानों को 29 हजार करोड़ का भुगतान

रायपुर। खरीफ विपणन वर्ष 2025-26 के अंतर्गत राज्य में धान खरीदी सुचारू, तेज़ और पारदर्शी ढंग से जारी है। अब तक प्रदेश के 23.48 लाख किसानों ने समर्थन मूल्य पर अपना धान बेचकर इस व्यवस्था का प्रत्यक्ष लाभ लिया है। सरकार द्वारा अपनाई गई डिजिटल और समयबद्ध प्रणाली के चलते किसानों में उत्साह है और खरीदी केंद्रों पर व्यापक भागीदारी देखने को मिल रही है।

धान खरीदी के एवज में अब तक किसानों को कुल 29,597 करोड़ रुपये का भुगतान किया जा चुका है। भुगतान प्रणाली की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि धान विक्रय के 48 घंटे के भीतर राशि सीधे किसानों के बैंक खातों में जमा की जा रही है। इससे बिचौलियों की भूमिका समाप्त हुई है और किसानों को समय पर भुगतान सुनिश्चित हो रहा है। त्वरित भुगतान से किसानों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई है और वे आगामी कृषि गतिविधियों की योजना सहजता से बना पा रहे हैं।

वर्तमान में प्रतिदिन औसतन 22,000 टोकन जारी किए जा रहे हैं, जिससे किसानों को अपनी बारी के अनुसार व्यवस्थित ढंग से धान बेचने का अवसर मिल रहा है। टोकन व्यवस्था ने भीड़ प्रबंधन और समय की बचत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

राज्य में प्रतिदिन लगभग 3 लाख मीट्रिक टन धान की खरीदी की जा रही है, जो इस अभियान की व्यापकता और प्रशासनिक क्षमता को दर्शाती है। बड़ी मात्रा में हो रही खरीदी के बावजूद गुणवत्ता परीक्षण, तौल और भंडारण की प्रक्रिया पर विशेष निगरानी रखी जा रही है, ताकि किसी भी स्तर पर गड़बड़ी न हो।

कुल मिलाकर खरीफ विपणन वर्ष 2025-26 की धान खरीदी किसान-केंद्रित, पारदर्शी और तकनीक-आधारित मॉडल के रूप में सामने आई है। समय पर टोकन, तेज़ खरीदी और 48 घंटे के भीतर भुगतान जैसी व्यवस्थाओं ने किसानों का विश्वास मजबूत किया है और यह अभियान प्रदेश की कृषि अर्थव्यवस्था को नई गति देने वाला साबित हो रहा है।

बीज निगम ने किसानों को किया 42 करोड़ से अधिक का अग्रिम भुगतान

रायपुर। छत्तीसगढ़ राज्य बीज एवं कृषि विकास निगम लि. द्वारा खरीफ वर्ष 2025 में किसानों से उपार्जित बीजों के विरुद्ध अब तक 42.67 करोड़ रुपये का अग्रिम भुगतान किया जा चुका है। 19 जनवरी 2026 की स्थिति में प्रदेश के समस्त बीज प्रक्रिया केंद्रों के माध्यम से 3,640 कृषकों से कुल 4,52,566 क्विंटल कच्चा बीज उपार्जित किया गया है।

उपार्जित मात्रा में से 1,923 कृषकों के 2,20,777.22 क्विंटल कच्चे बीज के विरुद्ध केंद्र शासन द्वारा निर्धारित समर्थन मूल्य का 80 प्रतिशत अग्रिम भुगतान सीधे किसानों के बैंक खातों में किया गया है। शेष किसानों के खातों एवं राशि का परीक्षण कर अग्रिम भुगतान की प्रक्रिया जारी है।

बीज निगम द्वारा अग्रिम भुगतान प्रक्रिया को सरल करते हुए अब कच्चे बीजों के नमूना परीक्षण परिणाम प्राप्त होते ही मानक बीज मात्रा पर 80 प्रतिशत राशि का शीघ्र भुगतान किया जा रहा है। इससे किसानों को समय पर आर्थिक सहायता मिल रही है। बीज मानक होने की स्थिति में पैकिंग कार्य पूर्ण होने के पश्चात शेष 20 प्रतिशत राशि का भुगतान भी सीधे खातों में किया जाएगा, वहीं बीज अमानक होने पर किसानों को राज्य शासन की धान खरीदी योजना का लाभ मिलेगा।

उल्लेखनीय है कि खरीफ वर्ष 2024 में बीज निगम द्वारा अनुमानित लक्ष्य 5,14,988 क्विंटल कच्चे बीज के विरुद्ध किसानों को 96.52 करोड़ रुपये की अग्रिम राशि तथा 3,96,457 क्विंटल पैक्ड बीज के विरुद्ध 29.51 करोड़ रुपये का अंतिम भुगतान किया गया था। इस प्रकार वर्ष 2024 में किसानों को उपार्जित बीजों के विरुद्ध कुल 126 करोड़ 3 लाख रुपये का भुगतान किया गया।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार बोन्द्रिया द्वारा एल.आई.जी.-5, सेक्टर -2 शंकर नगर, रायपुर 492001 (छत्तीसगढ़) से प्रकाशित एवं कृषक जगत, 14 इंदिरा प्रेस कॉम्प्लेक्स, भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित, सम्पादक : सुनील गंगराड़े, समन्वयक : अतुल सक्सेना, रायपुर : प्रेम प्रकाश सुल्लेरे, फोन : 0771-2420449, मो. : 9826255862, इस अंक का मूल्य रु. 12/-, वार्षिक शुल्क रु. 600/- RNI No.-CHHHIN/2002/10910, E-mail-info@krishakjagat.org

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

कृषक जगत
संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

अमृत जगत

आनंद वह वस्तु है जिसे मांगने पर पछताना नहीं पड़ता।
- सुकरात

मावठा और ओलावृष्टि : अवसर, चेतावनी और किसान की सजगता

प्रकृति की हर मेहरबानी अपने साथ कुछ अवसर लाती है, तो कुछ कठोर संदेश भी छोड़ जाती है। हाल की मावठे की वर्षा ने जहाँ रबी फसलों के लिए नई उम्मीद जगाई है, वहीं मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान के कुछ हिस्सों में हुई ओलावृष्टि ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि मौसम का असंतुलन कितनी तेजी से लाभ को नुकसान में बदल सकता है। कृषि, जो हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, सबसे पहले और सबसे अधिक इसी अनिश्चितता का सामना करती है।

मावठे की बारिश विशेष रूप से असिंचित क्षेत्रों के लिए वरदान साबित हो सकती है। प्रदेश में खेती का बड़ा हिस्सा वर्षा आधारित है और इस समय मिली नमी यदि सही ढंग से उपयोग में लाई जाए तो गेहूं, चना, मसूर और अन्य रबी फसलों की पैदावार में सुधार संभव है। लेकिन ओलावृष्टि से प्रभावित क्षेत्रों ने यह भी याद दिलाया है कि केवल उत्पादन बढ़ाने की उम्मीद करना पर्याप्त नहीं, बल्कि जोखिम प्रबंधन भी उतना ही जरूरी है।

देश के कुछ हिस्सों में ओलावृष्टि ने खड़ी फसलों को नुकसान पहुँचाया है। गेहूं की बालियों, चने और अरहर की फलियों पर सीधा प्रभाव पड़ा है। यह स्थिति बताती है कि बदलते मौसम में चरम घटनाएँ- जैसे ओला, पाला या असमय वर्षा—अब अपवाद नहीं रहीं। ऐसे में फसल बीमा, समय पर

सर्वे और त्वरित राहत व्यवस्था पर गंभीरता से ध्यान देने की आवश्यकता है।

वर्षा के बाद मौसम के साफ होते ही पाले की आशंका भी बढ़ जाती है। विशेषकर अरहर की फसल, जो फूल अवस्था में होती है, पाले से सबसे अधिक प्रभावित हो सकती है। वहीं आलू की फसल में नमी और ठंडक का यह संयोग पिछेती झुलसा रोग को बढ़ावा दे सकता है, जिससे समय पर फफूंदनाशी छिड़काव की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है।

गेहूं की फसल के लिए गेरूआ रोग की चुनौती भी कम गंभीर नहीं है। मावठे के जल और हवा के साथ पर्वतीय क्षेत्रों से आने वाली फफूंदियाँ अभी भले ही शांत हो, लेकिन तापमान अनुकूल होते ही उनका प्रसार तेजी से हो सकता है। मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में भूरे और काले गेरूए का खतरा विशेष सतर्कता की माँग करता है।

खेती आज केवल मेहनत का विषय नहीं रही, बल्कि समझ और तैयारी का भी प्रश्न बन चुकी है। किसान को अब मौसम की हर करवट पर नजर रखनी होगी और वैज्ञानिक सलाह को अपनाना होगा। ओलावृष्टि से मिले घाव यह सिखाते हैं कि प्रकृति की कृपा के साथ उसकी कठोरता के लिए भी तैयार रहना जरूरी है।

अंततः मावठा हो या ओलावृष्टि—दोनों प्रकृति के संकेत हैं। यदि इन संकेतों को समय रहते समझा जाए, तो नुकसान को सीमित कर लाभ की संभावनाएँ बढ़ाई जा सकती हैं। जागरूक किसान, सक्रिय प्रशासन और समय पर निर्णय ही खेती को इन अनिश्चितताओं के बीच टिकाऊ और लाभकारी बना सकते हैं।

नीलगाय और जंगली सुअर : खेती और नीति की समस्या

● अरविंद सरदाना

नीलगाय और जंगली सुअर से फसलों को बड़े पैमाने पर हो रहे नुकसान से किसान परेशान हैं और खेती- किसानी को जानने- समझने वाले लगभग सभी लोग इस समस्या से वाकिफ हैं। इस समस्या के निदान में कई भ्रांतियाँ बाधक बनी हैं। मसलन- यह भ्रम बना हुआ है कि इन जानवरों का आवास जंगल में है जो कि सही नहीं है। एक अध्ययन के अनुसार 85 प्रतिशत नीलगायों का आवास राजस्व क्षेत्र में है।

गाँव के आसपास की चरनोई ज़मीन और वहाँ की झाड़ियों के बीच इनका डेरा रहता है। वहाँ से वे अपना पेट भरने के लिए खेतों में आ जाती हैं और फसलों को नुकसान पहुँचाती हैं। नीलगायों की संख्या कई गुना बढ़ गई है। एक रपट के अनुसार मध्यप्रदेश के अकेले शाजापुर जिले में नीलगायों की संख्या लगभग 2000 और कुछ अन्य जिलों में 6000 है। मध्यप्रदेश के ऐसे 21 जिले हैं, जिन्हें वन विभाग ने समस्याग्रस्त बताया है। इन जिलों के राजस्व क्षेत्र में नीलगायों की संख्या हजारों में होने की सम्भावना है।

एक अनुमान के अनुसार भारत में करीब एक लाख नीलगायें हैं और इनका बड़ा हिस्सा मध्यप्रदेश में है जहां पुराना अनुमान 33,500 का बताया जाता है। जंगल को बचाने के लिए इन्हें 'वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम,1972' में जोड़ा गया था, किन्तु जब नीलगाय की मौजूगी राजस्व क्षेत्र में होने की बात सामने आई तो यह स्वतः ही 'वन्यजीव संरक्षण कानून' की परिधि से बाहर हो गई। एक नीलगाय को प्रतिदिन 18 से 30 किलो हरा चारा चाहिए जो चरनोई की घास एवं खेती को नष्ट करके ही प्राप्त हो सकता है। एक जिले में जहाँ 6000 नीलगाय हैं, वहाँ इनसे लगभग 4000 हेक्टेयर कृषि भूमि प्रभावित होती है।

इस तथ्य का पहला निष्कर्ष यह निकलता है कि वन विभाग को मध्यप्रदेश के 21 जिलों और

34 चिन्हित ब्लाकों, जो उनकी रपट के अनुसार सबसे प्रभावित इलाके हैं, में सघन सर्वे करके नीलगाय और जंगली सुअर की गणना की जाए। इसमें ग्राम पंचायत और किसानों का पूरा सहयोग लिया जाए। सर्वे के माध्यम से नीलगायों के डेरों को मानचित्र पर उतारा जाना चाहिए और उनका प्रभाव क्षेत्र एवं संख्या नोट की जानी चाहिए।

समस्या के निदान का एक तरीका हो सकता है कि नीलगायों को राजस्व क्षेत्र से पकड़कर जंगल में छोड़ा जाए। कई कारणों से यह कारगर नहीं है। हाल में शाजापुर जिले में स्थानांतरण का एक प्रयोग किया गया था। यह साउथ अफ्रीका की 'बोमा तकनीक' है। एक बागड़ बनाकर रास्ता निकाला जाता है जहाँ से हिरण एवं नीलगाय को हेलीकाप्टर की मदद से जंगल की ओर भगाया जाता है। इस तरह से केवल 67 नीलगायों को हकाला जा सका, जबकि उनकी संख्या हजारों में है। यदि स्थानांतरण संभव भी हो, तब भी तर्क संगत नहीं है, क्योंकि वर्तमान में वन्यजीवों की बड़ी संख्या के पोषण की आपूर्ति जंगल नहीं कर सकता। जंगल के संसाधनों को

नीलगायों और जंगली सुअरों का फसलों को चौपट करने के लिए खेतों में उतरना एक तरह से कथित 'वैज्ञानिक वानिकी' का ही नतीजा है। कई इलाकों में वन्यप्राणियों के वन-निवासियों से घातक द्वंद्व भी इसी पद्धति से उपजे हैं। इनसे आखिर कैसे निपटा जा सकता है?

देखते हुए एक सीमित मात्रा में स्थानांतरण किया जा सकता है। कई लोगों का कहना है कि जंगल में चरनोई एवं पानी की व्यवस्था बढ़ाई जाए, ताकि इस प्रकार के वन्यजीवों के लिए पर्याप्त पोषण हो सके।

नीलगाय एवं जंगली सुअर की विशाल संख्या, जिन्होंने गौचर भूमि पर दशकों से डेरा बना लिया है, को कम करने का एक ही तरीका हो सकता है। 'वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972' में प्रावधान है कि चिन्हित इलाकों में नीलगाय एवं जंगली सुअर को 'वर्मिन' यानी नुकसानदायक जानवर घोषित किया जाए। यह एक निश्चित समय के लिए लागू होता है। ऐसा करने पर वन विभाग, अपने नियंत्रण में उनकी संख्या को कम करने की योजना बना सकता है। वह शिकारियों की टीम गठित कर सकता है और एक योजना के तहत इसे अंजाम दे सकता है।

इसी प्रकार की योजना बिहार में लागू की गई थी और सफल रही। वर्ष 2015 में क़ानूनी अनुमति के बाद नीलगाय और जंगली सुअर को 'वर्मिन' घोषित किया गया। यह बिहार के 31 जिलों में लागू किया गया था। एक अनुमान है कि लगभग दस हज़ार नील गायों को मारा गया। इस प्रक्रिया में पंचायतों की लिखित शिकायत पर जांच करके वन विभाग ज़रूरत पड़ने पर शिकारियों की व्यवस्था करता है। वर्ष 2016 में उत्तराखंड सरकार ने जंगली सुअरों को मारने की अनुमति ली। इस प्रकार की अनुमति 'मुख्य वन्यप्राणी वार्डन' द्वारा विशेष परिस्थितियों में दी जाती है और कई राज्यों ने इसका उपयोग किया है।

इस समय मध्यप्रदेश के लिए एक विशेष अभियान की ज़रूरत है क्योंकि यह वन्यजीव जंगल के बाहर बड़ी संख्या में बसे हुए हैं। मुआवजा देकर या बागड़ बनाकर इसका हल निकालना समस्या को टालने वाला कदम होगा। अभी तक मुआवजे का रिकॉर्ड नगण्य रहा है और नीलगाय आसानी से बागड़ लांघ जाते हैं। पानी सर के ऊपर हो जाने से पहले कदम उठाना समझदारी होगी।

इसकी रोकथाम से खेती पर बड़ा प्रभाव पड़ेगा। आज किसानों ने कई फसलें लगाना छोड़ दिया है जिन्हें नीलगाय या जंगली सुअर के झुण्ड रातों-रात नष्ट कर देते हैं, जैसे-चना, मक्का, तुअर, मूंगफली, सब्जियाँ आदि। हम मिश्रित खेती की ओर जाना चाहते हैं, इसलिए भी इस समस्या का निदान ज़रूरी है। आवश्यक है कि नीलगाय एवं जंगली सुअर की समस्या को केवल संघर्ष के रूप में नहीं, बल्कि 'मानव - वन्यजीव प्रबंधन' के रूप में देखा जाए। 'वर्मिन' घोषित करने जैसे निर्णयों के साथ प्रशिक्षित शिकारी और वन विभाग की सीधी जवाबदेही तय करना आवश्यक है। **(सप्रेस)**

फसल में सल्फर का महत्व

● अनामिका तोमर

सल्फर, जो कि मृदा पोषण में चौथा आवश्यक तत्व है, जिस पर किसान प्राय: ध्यान नहीं देते हैं, तिलहनी फसलें भारतीय आहार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इसका उत्पादन लगभग 24 मिलियन टन हो रहा है। तिलहन फसल के लिए संतुलित उर्वरक का प्रयोग आवश्यक है, जिसमें नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश, गंधक, जिंक व बोरान तत्व अति आवश्यक है। गत वर्षों में संतुलित उर्वरकों के अंतर्गत केवल नत्रजन, फास्फोरस एवं पोटाश के उपयोग पर बल दिया गया। सल्फर के उपयोग पर विशेष ध्यान न दिये जाने के कारण मृदा के नमूनों में 40 प्रतिशत गंधक (सल्फर) की कमी पाई गई। आज उपयोग में आ रहे गंधक रहित उर्वरकों जैसे यूरिया, डीएपी, एनपीके तथा म्यूरेट ऑफ पोटाश के उपयोग से गंधक की कमी निरंतर बढ़ रही है।

फसल की अच्छी उपज के लिए हम उर्वरक का इस्तेमाल करते हैं, क्योंकि बिना उर्वक के फसल की अच्छी उपज होना मुश्किल है। ऐसे में खेती के लिए सबसे बड़ी जरूरत सही उर्वरक का चयन है। खेती के लिए किस प्रकार की उर्वरक लाभदायी होगी उसकी कैसे पहचान करें ये जानना बहुत जरुरी है।

गंधक की कमी मुख्यत: निम्न कारणों से भूमि के अंदर हो जाती है, जिसकी तरफ कृषकों का ध्यान नहीं जाता-

● भूमि में संतुलित उर्वरकों का प्रयोग न करना।

● लगातार विभिन्न फसलों द्वारा गंधक जमीन में लेते रहने व सल्फर रहित उर्वरकों के प्रयोग में इन तत्वों की कमी हो जाती है।

● ऐसे उर्वरकों का उपयोग जिसमें बहुत कम या न के बराबर सल्फर का होना।

● जहाँ अकार्बनिक खादें प्रयोग में नहीं आती है, वहाँ पर भी सल्फर की कमी का होना।

● हाल ही में तोड़ कर विकसित की गई भूमि या हल्क गठन वाली बलुई मिट्टी में, जहाँ निक्षालन द्वारा पोषक तत्वों की हानि हो जाया करती है, सल्फर की कमी पाई जा सकती है।

सल्फर की कमी के लक्षण

● सल्फर की कमी से पौधों का रंग पीला हो जाता है और इस कमी की शुरुआत पौधों के ऊपरी हिस्से या नये पत्ते से होती है।

● सल्फर की कमी से पौधों का विकास रुक जाता है।

● पौधों का हरापन कम हो जाता है।

● खाद्यान्न फसलें अपेक्षाकृत देर से पकती हैं एवं बीज ढंग से परिपक्व नहीं हो पाते हैं।

● पत्तियां व तने में बैंगनीपन आ जाता है।

● गंधक के अभाव में पौधे पीले, हरे, पतले और आकार में छोटे हो जाते हैं तथा पौधे का तना पतला और कड़ा हो जाता है।

● सल्फर की कमी से आलू की पत्तियों का रंग पीला, तने कठोर तथा जड़ों का विकास कम रहता है। सल्फर की कमी से फसल में फूल नहीं आते और न ही फल बनते हैं।

गंधक के कार्य

● गंधक क्लोरोफिल का अवयव नहीं है फिर भी यह इसके निर्माण में सहायता करता है तथा पौधे के हरे भाग की अच्छी वृद्धि करता है।

● यह गंधक युक्त एमिनो अम्लों, सिस्टाइन, सिस्टीन तथा मिथियोनीन तथा प्रोटीन संश्लेषण में आवश्यक होता है।

● सरसों के पौधों की विशिष्ट गंध निर्माण को यह प्रभावित करती है। तिलहनी फसलों के पोषण में गंधक का विशेष महत्व है क्योंकि बीजों में तेल बनने की प्रक्रिया में इस तत्व की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

● सरसों के तेल में गंधक के यौगिक पाये जाते हैं। तिलहनी फसलों में तैलीय पदार्थ की मात्रा में वृद्धि करती है।

● इसके प्रयोग से बीज बनने की क्रियायों में तेजी आती है।

गंधक की कमी को दूर करना

गंधक की कमी गंधक युक्त निम्नलिखित उर्वरकों के प्रयोग से दूर की जा सकती है।

उर्वरक	उपलब्ध गंधक (प्रतिशत)	प्रयोग विधि
सिंगल सुपर फास्फेट	12	बुवाई के पूर्व बेसल ड्रेसिंग के रूप में
पोटैशियम सल्फेट	18	बुवाई के पूर्व बेसल ड्रेसिंग के रूप में
अमोनिमयम सल्फेट	24	बुवाई के पूर्व बेसल ड्रेसिंग के रूप में एवं खड़ी फसल में टाप ड्रेसिंग के रूप में।
जिप्सम (शुद्ध)	18	भूमि की सतह पर उचित नमी की दशा में बुवाई में 3-4 सप्ताह पूर्व प्रयोग करें। यह ऊसर भूमि के लिए ज्यादा उपयुक्त है
पाइराइट	22	भूमि की सतह पर उचित नमी की दशा में बुवाई में 3-4 सप्ताह पूर्व प्रयोग करें। यह ऊसर भूमि के लिए ज्यादा उपयुक्त है
जिंक सल्फेट	18	जस्ते की कमी वाली भूमि के लिए उपयुक्त है। इसका प्रयोग बुवाई के 3-4 सप्ताह पूर्व या खड़ी फसल में पर्णीय छिड़काव करें।
तात्विक गंधक	95-100	जिस भूमि में वायु का संचार अच्छा हो तथा चिकनी मिट्टी (भारी भूमि) के लिए विशेष उपयुक्त है। बुवाई के 3-4 सप्ताह पूर्व उचित नमी की दशा में प्रयोग करें।

इन उर्वरकों में गंधक, सल्फेट के रूप में पाया जाता है, जिसका उपयोग पौधे सुगमता पूर्वक कर लेते हैं।

कृषक जगत डायरी - 2026
बुकिंग प्रारंभ
नए आकार, नए कलेवर में
(एग्जीक्यूटिव डायरी)

कृषि विस्तार कार्यकर्ताओं के लिए संदर्भ ग्रंथ
वर्ष भर कृषि सेवाओं और उत्पादों के
प्रचार हेतु सर्वोत्तम माध्यम

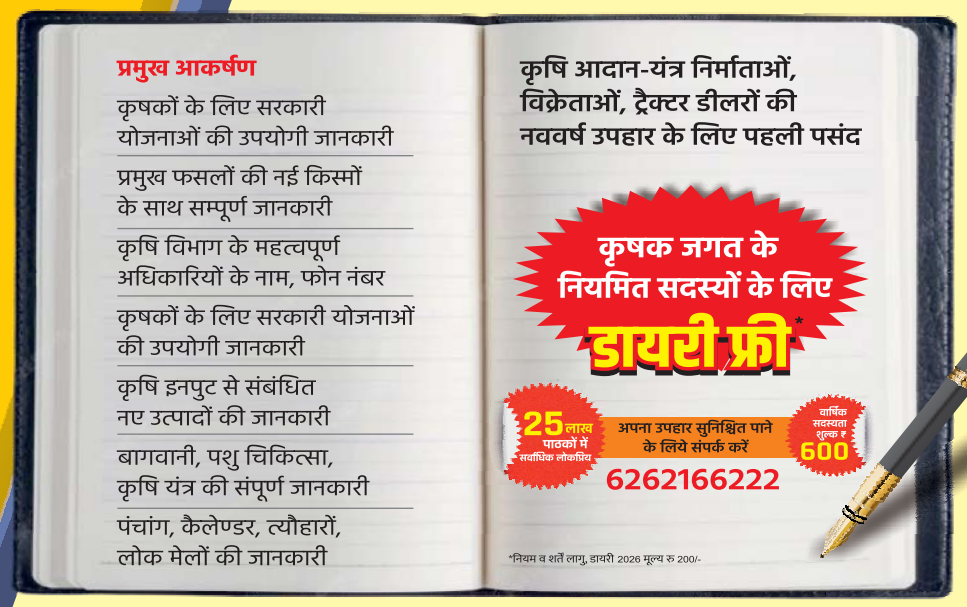

मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ एवं राजस्थान कृषि पर विशेष जानकारी
विज्ञापन एवं डायरी खरीदी के लिए संपर्क करें
• इंदौर - सचिन बोन्द्रिया : 9826021837 • भोपाल - अजय बोन्द्रिया : 9826255861
• इंदौर कार्यालय : 9826024864 • रायपुर - प्रेमप्रकाश सुल्लेरे : 9826255862
• नई दिल्ली व जयपुर - निमिष गंगराड़े : 7387422952
• ई-मेल : info@krishakjagat.org • वेबसाइट : www.krishakjagat.org

संतरे की उन्नत खेती

भारत में केले के पश्चात नींबू प्रजाति के फलों का तीसरा स्थान है इसमें सर्दी तथा गर्मी सहन करने की क्षमता होने के कारण नींबू प्रजाति का कोई ना कोई फल लगभग सभी प्रांतों में उगाया जाता है। इन नींबू वर्गीय फलों में संतरा भी एक महत्वपूर्ण फल है। संतरे को वानस्पतिक रूप से सिट्रस रिटीकुलेटा के नाम से जाना जाता है। भारत में नींबू प्रजाति के फलों में संतरे का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है इसे मेंडेरीन भी कहते हैं। संतरा अपनी सुगंध और स्वाद के लिए प्रसिद्ध है। इसमें विटामिन सी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, इसके साथ–साथ इसमें विटामिन 'ए' और 'बी' भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहते हैं। देश के अंदर संतरे का कुल क्षेत्रफल 4.28 लाख हेक्टेयर है जिससे 51.01 लाख टन उत्पादन होता हैं।

● दुर्गाशंकर मीणा
● डॉ. मूलाराम
● जयराज सिंह गौड़
● मुकुट बिहारी
Email:-dstameena1997@gmail.com

भूमि

संतरे की खेती लगभग सभी प्रकार की अच्छे जल निकास वाली जीवांश युक्त भूमि में की जा सकती है, परंतु गहरी दोमट मिट्टी इसके लिए सर्वोत्तम मानी जाती है। भूमि की गहराई 2 मीटर हो। मृदा का पीएच 4.5 से 7.5 उचित रहता है। इसकी सफलतम खेती के लिए अवमृदा कंकरीली पथरीली व कठोर नहीं होनी चाहिए।

उन्नत किस्में

भारत में उगाई जाने वाली किस्मों में नागपुरी संतरा, खासी संतरा, कुर्ग संतरा, पंजाब देसी, दार्जिलिंग संतरा व लाहौर लोकल आदि प्रमुख हैं। भारतीय संतरा में नागपुर संतरा सर्वोपरि हैं एवं विश्व के सर्वोत्तम संतरा में इसका स्थान प्रमुख हैं। किंग तथा विलोलीफ के संकरण से तैयार किन्नों की किस्म पंजाब और राजस्थान में व्यवसायिक महत्व की किस्म है।

प्रवर्धन

संतरे का वानस्पतिक प्रवर्धन कलिकायन विधि द्वारा किया जाता है। कलिकायन के लिये मूलवृन्त के रूप में जट्टी खट्टी, जम्भिरी, रंगपुर लाइम, किलओप्टरा मेन्डेरिन, ट्रायर सिट्रेन्ज तथा करना खट्टा काम में लेते हैं। मूलवृन्त फरवरी माह मे तैयार किये जाते है। लगभग एक वर्ष आयु का मूलवृन्त कलिकायन के लिये उपयुक्त रहता है। साधारणत: शील्ड एवं पैच कलिकायन फरवरी से मार्च व सितम्बर – अक्टूबर में किया जाये।

पौधा रोपण

कलिकायन किये गये पौधे दूसरे वर्ष जब लगभग 60 सेमी. के हो जाये तो पौधारोपण हेतु उपयुक्त माने जाते हैं। संतरे के पौधे लगाने के लिए 90 घन सेमी. आकार के गड्ढे मई–जून में 6×6 मीटर की दूरी पर खोदे जाते हैं। उत्तरी भारत में पौधे लगाने का उचित समय जुलाई–अगस्त है। पौधा लगाने से पूर्व प्रत्येक गड्ढे को 20 किलोग्राम गोबर की खाद, 1 किलोग्राम सुपर फास्फेट व मिट्टी के मिश्रण से भरें। दीमक के नियंत्रण के लिए मिथाइल पेराथियान 50–100 ग्राम प्रति गड्ढा दें।

गोबर की खाद, सुपर फास्फेट, म्यूरेट ऑफ पोटाश की पूरी मात्रा दिसम्बर–जनवरी में दें। यूरिया की 1/3 मात्रा फरवरी में फूल आने के पहले तथा शेष 1/3 मात्रा अप्रेल में फल बनने के बाद और शेष मात्रा अगस्त माह के अन्तिम सप्ताह में देवें। संतरा में फरवरी व जुलाई माह में गौण तत्वों का छिड़काव करना उचित रहता है। इसके लिये 550 ग्राम जिंक सल्फेट, 300 ग्राम कॉपर सल्फेट, 250 ग्राम मैंगनीज सल्फेट, 200 ग्राम मैग्नेशियम सल्फेट, 100 ग्राम बोरिक एसिड, 200 ग्राम फेरस सल्फेट व 900 ग्राम चूना लेकर 100 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

सिंचाई

सर्दी में दो सप्ताह व गर्मी में एक सप्ताह के अंतराल पर सिंचाई करें। फल लगते समय पानी की कमी से फ्ल झड़ने लगते हैं। फल पकने के समय पानी की कमी से फ्ल सिकुड़ जाते है व रस की प्रतिशत मात्रा घट जाती है। अत: जब सन्तरे का उद्यान फलन में हो तब आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। खाद देने के बाद सिंचाई करना परम आवश्यक है। कटाई–छंटाई संतरे का सुन्दर ढांचा बनाने के लिए प्रारम्भिक वर्षो मे कटाई–छंटाई की जाती है। फल देने वाले पौधो को कटाई–छंटाई की कम आवश्यकता होती है, परन्तु सूखी व रोगग्रस्त टहनियों को काटते रहें।

उपज एवं भण्डारण

कलिकायन द्वारा तैयार किये गये पौधे 3–5 वर्ष की आयु में फल देते हैं। प्राय: पुष्पन के 8 से 9 माह बाद फल पक कर तैयार हो जाते है। संतरे के फलों का रंग हल्का पीला हो जाये तब इन्हें तोड़ लें। 600 से 800 फल तथा औसतन 70 से 80 किग्रा. प्रति पौधा प्राप्त होती है। संतरा के फलों को 5–6 डिग्री सेल्सियस तापक्रम व 85–90 प्रतिशत आपेक्षिक आर्द्रता पर 4 महीने तक भण्डारित किया जा सकता है।

फलों का गिरना

सामान्यत: माल्टा में तुड़ाई के लगभग पांच सप्ताह पहले से फ्ल गिरने लगते हैं, इसकी रोकथाम हेतु 2, 4–डी (10 पीपीएम) या एनएए150 पीपीएम) का छिड़काव करें। इसके अतिरिक्त फलन के समय भूमि में समुचित नमी बनाये रखें।

यदि फलन के समय किसी कवक जनित रोग का प्रकोप हो तो उसके नियंत्रण का उचित उपाय करना लाभकारी रहता है।

खाद एवं उर्वरक

संतरे के पौधों से उत्तम गुणवत्ता वाले अधिक फल प्राप्त करने के लिये खाद व उर्वरकों का उचित प्रबंधन करें। संतरे के पौधो में निम्न सारणी अनुसार खाद व उर्वरक देने की अनुशंसा की जाती है।

पौधे की आयु	गोबर खाद (कि.ग्रा.)	यूरिया (ग्राम)	एसएसपी (ग्राम)	एमओपी (ग्राम)
एक वर्ष	15	125	250	–
दो वर्ष	30	250	500	–
तीन वर्ष	45	375	750	200
चार वर्ष	60	500	600	200
पाँच वर्ष	75	625	1250	400

कीट

नींबू की तितली– तितली की लटें पत्तियों

को खाकर नुकसान पहुंचाती है। इससे पौधों की वृद्धि रुक जाती है। इसके नियंत्रण के लिये लटों को पौधों से पकड़ कर मिट्टी के तेल में डालें। क्विनालफास 25 ई.सी. का 1.5 मिली./लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

फल चूसक – कीट फलों से रस चूस कर नुकसान करता है। प्रभावित फल पीला पड़कर सूख जाता है और गुणवत्ता भी कम हो जाती है। इस कीट के नियंत्रण के लिये मैलाथियॉन 50 ई.सी. 1 मिली./लीटर पानी का घोल का छिड़काव करें। कीट को आकर्षित करने के लिये प्रलोभक का भी उपयोग करना चाहिए। प्रलोभक में 100 ग्राम शक्कर के 1 लीटर घोल में 10 मिली. मेलाथियॉन मिलाया जाता है।

लीफ माइनर – यह कीट वर्षा ऋतु में नुकसान पहुंचाता है। यह पत्तियों की निचली सतह को क्षतिग्रस्त कर पत्तियों में सुरंग बनाता है। इस कीट के नियंत्रण हेतु मिथाइल डिमेटॉन 25 ई.सी. या क्विनालफास 25 ई.सी. का 1.5 मिली./लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़कें।

मूलग्रन्थी (सूत्रकृमि) – यह नींबू प्रजाति के फलों की जड़ों को नुकसान पहुँचाता है। इसके प्रकोप से फल छोटे व कम लगते हैं। नुकसान पहुंचाता है जिससे पत्तियाँ पीली पड़ कर टहनियाँ सूखने लगती इसके नियंत्रण के लिये कार्बोफ्यूरॉन 3 जी. 20 ग्राम/पौधा देना चाहिए।

व्याधियाँ

नींबू का केंकर – यह रोग जेन्थोमोनास

सिट्राई नामक जीवाणु द्वारा होता है। रोग से प्रभावित पत्तियों, फलों व टहनियों पर भूरे रंग के धब्बे पड़ जाते है। फलों पर पीले, खुरदरे धब्बे बन जाने से गुणवत्ता प्रभावित होती है। कागजी नींबू इससे ज्यादा प्रभावित होते है। केंकर की रोकथाम के लिये 20 ग्राम एग्रोमाइसीन अथवा 8 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन को 10 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए। नये रोग रहित पौधों का चुनाव करें तथा पौधों पर रोपण से पूर्व 4:4:50 बोर्डो मिश्रण छिड़कें।

गमोसिस – यह तना सड़न रोग है जिसमें तने से भूमि के पास व टहनियों के ग्रसित भाग से गोंद जैसा पदार्थ निकलता है। इस गोंद से छाल प्रभावित होकर नष्ट हो जाती है। रोग के अधिक प्रकोप से पौधा नष्ट हो जाता है। रोग के नियंत्रण के लिये छाल से गोंद हटाकर ब्लाईटॉक्स–50 0.3 प्रतिशत का छिड़काव करना चाहिए। इस दवा का छिड़काव पौधों पर भी किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त बाग का उचित प्रबंधन भी रोग से बचाव करता है।

सूखा रोग (डाई बैक) – इस रोग में टहनियाँ ऊपर से नीचे की तरफ सूख कर भूरी हो जाती है। पत्तियों पर भूरे बेंगनी धब्बे बनने से सूख कर गिर जाती है। इससे उपज पर विपरीत प्रभाव पड़ता है तथा पौधा नष्ट हो जाता है। नियंत्रण के लिये रोगी भाग को काट कर अलग करें एवं मेन्कोजेब 2 ग्राम/लीटर पानी का घोल का छिड़काव करें। इसके अतिरिक्त फरवरी व अप्रैल माह में सूक्ष्म तत्वों का पौधों पर छिड़कें।

झींगा पालन में तीव्र हेपेटोपैन्क्रिएटिक नेक्रोसिस रोग

● चोवतिया रविकुमार मनसुखभाई
● परमार बिंदिया कीर्तिकुमार
शोध छात्र, मात्स्यिकी महाविद्यालय, केरल मात्स्यिकी और महासागर अध्ययन विश्वविद्यालय, केरल
● भावेश चौधरी
शोध छात्र, मात्स्यिकी महाविद्यालय, केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय (इम्फाल), लेम्बुचेर्रा, त्रिपुरा
bhaveshchoudhary@yahoo.com

वैश्विक अर्थव्यवस्था में जलीय कृषि उद्योग की एक बड़ी भूमिका है। यह व्यावसायिक क्षेत्रों को रोजगार के अवसर और राजस्व प्रदान करता है। इसकी मांग वर्षों से बढ़ती जा रही है और यह मानव उपभोग पर बहुत अधिक निर्भर है। जलीय कृषि के विभिन्न क्षेत्रों में, क्रस्टेशियन उद्योग ने पिछले वर्षों में दुनिया भर में क्रस्टेशियन की बढ़ती बाजार मांग के कारण तेजी से विकास किया है। झींगा और झींगा उद्योगों को प्रमुख राजस्व उत्पादक माना गया है, और कई जलीय कृषक उपभोग के लिए प्राथमिक प्रोटीन स्रोतों के रूप में झींगा और झींगा की खेती पर ध्यान केंद्रित करते हैं। बाजार मूल्य के संदर्भ में व्यापार की जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण वस्तुओं में से एक झींगा माना जाता है। क्रस्टेशियन को दुनिया भर में उच्च मांग वाले आर्थिक रूप से प्रासंगिक जलीय कृषि उत्पादों के रूप में माना जाता है। 30 से अधिक विभिन्न प्रजातियों से 2017 में कुल क्रस्टेशियन जलीय कृषि उत्पादन 8.4 एमटी था, जिसका मूल्य 61.06 बिलियन अमरीकी डॉलर था, 2000 के बाद से प्रति वर्ष 9.92 प्रतिशत की औसत वार्षिक वृद्धि दर के साथ। समुद्री झींगा वर्तमान में क्रस्टेशियन एक्वाकल्चर पर 5.51 एम.टी. या कुल क्रस्टेशियन का 65.3 प्रतिशत (34.2 बिलियन अमरीकी डालर का मूल्य) के साथ हावी है, इसके बाद ताजे पानी की क्रस्टेशियन (2.53 एमटी या 29.9 प्रतिशत कुल क्रस्टेशियन) है और इसका मूल्य 24.3 बिलियन अमरीकी डालर है। यद्यपि झींगा वैश्विक जलीय कृषि उत्पादन का केवल 6 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करता है, वे व्यापारिक समुद्री खाद्य उत्पादों के उत्पादन मूल्य का लगभग 16 प्रतिशत योगदान करते हैं। हालांकि, वैश्विक मांग में वृद्धि के कारण, झींगा जलीय कृषि प्रणालियों की तीव्रता और विस्तार के दबाव ने अधिकांश जलीय कृषि व्यवसाय को नाजुक बना दिया है। वैश्विक कृषि में झींगा के उत्पादन में वृद्धि हुई है, लेकिन प्रमुख उत्पादक देशों, विशेष रूप से एशिया में, झींगा रोगों के कारण उत्पादन में गिरावट आई है।जलीय कृषि उद्योग में, एफ.ए.ओ. द्वारा बीमारी के प्रकोप से आर्थिक नुकसान प्रति वर्ष 9 बिलियन अमरीकी डालर से अधिक होने का अनुमान लगाया गया है, जो विश्व कृषि मछली और शेलफिश उत्पादन के मूल्य का लगभग 15 प्रतिशत है।

विशेष रूप से, जीवाणु रोगों ने पिछले दशकों के दौरान झींगा जलीय कृषि उद्योग में सामाजिक-आर्थिक और पर्यावरणीय अस्थिरता लाई है। विब्रियोसिस, एक महत्वपूर्ण जीवाणु रोग, अवसरवादी विब्रियो एसपीपी के कारण होता है। क्षेत्र में झींगा किसानों के लिए सबसे गंभीर खतरे के रूप में जारी है।जलीय कृषि में सबसे महत्वपूर्ण समस्याओं में से एक जलीय जानवरों के स्वास्थ्य और उत्पादन को खतरे में डालने वाली विभिन्न बीमारियों की घटना है। समुद्री जानवर सचमुच संभावित रोगजनकों में तैरते हैं जो उन्हें वायरस, बैक्टीरिया, कवक और यहां तक कि प्रोटोजोआ के प्रति अतिसंवेदनशील बनाते हैं। वी. हार्वेई, वी. एल्गिनोलिटिकस, वी. एंगिलेरम, वी. स्प्लेन्डिडस, वी. सैल्मोनिसिडा, वी. वल्निफिकस और वी. पैराहेमोलिटिकस उपभेद वाइब्रियोसिस के मुख्य कारक जीवों के रूप में पाए गए हैं। कुछ विब्रियो स्पीशीज तीव्र हेपेटोपैन्क्रिएटिक नेक्रोसिस रोग (ए.एच.पी.एन.डी.) के लिए भी जिम्मेदार हैं जिसे मूल रूप से प्रारंभिक मृत्यु सिंड्रोम के रूप में जाना जाता है।

झींगा जलीय कृषि में एएचपीएनडी 2013 के अंत से बढ़ गया है, जब दक्षिण-एशियाई देशों में उद्योग ध्वस्त हो गया था। एएचपीएनडी, झींगा जलीय कृषि उद्योग पर विनाशकारी प्रभाव डालता है, तेजी से विकसित होता है, लगभग 8 दिनों के बाद स्टॉकिंग और गंभीर मृत्यु दर (100 प्रतिशत तक) 20-30 दिनों के भीतर होता है।

तीव्र हेपेटोपैन्क्रिएटिक नेक्रोसिस रोग (ए.एच.पी.एन.डी.) एक अपेक्षाकृत नई खेती की जाने वाली पेनेइड झींगा जीवाणु रोग है जिसे मूल रूप से प्रारंभिक मृत्यु दर सिंड्रोम (ई. एम. एस.) के रूप में जाना जाता है जो झींगा उद्योग में तबाही मचा रहा है। ए.एच.पी.एन.डी. का प्रकोप पहली बार 2009 में चीन में दिखाई देने के बाद से यह वियतनाम (2010) मलेशिया (2011) थाईलैंड (2012) मैक्सिको (2013) फिलीपींस (2015) और दक्षिण अमेरिका में फैल गया है। (2016) एएचपीएनडी झींगा की कई प्रजातियों को प्रभावित करता है जिनमें वाणिज्यिक प्रजातियां, पी. मोनोडन, एल. वानामेई और एम. रोसेनबर्गी और क्रस्टेशियन मॉडल आर्टेमिया फ्रांसिस्काना शामिल हैं। इसके अलावा, झींगा के प्रारंभिक जीवन चरण, सामान्य रूप से, ए.एच.पी.एन.डी. संक्रमण के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं।

ए.एच.पी.एन.डी. की विशेषता झींगा हेपेटोपैंक्रियाज के गंभीर शोष के साथ-साथ रोग के तीव्र चरण में अद्वितीय हिस्टोपैथोलॉजिकल परिवर्तन हैं। इसके अलावा, जैसे-जैसे बीमारी बढ़ती है, किसी भी रोगजनक की अनुपस्थिति में हेपेटोपैन्क्रिएटिक या पाचन तंत्र उपकला कोशिकाओं का बड़े पैमाने पर स्लोइंग झींगा पोस्ट-लार्वा स्टॉकिंग के लगभग पहले 30 दिनों के भीतर देखा जा सकता है। वास्तव में, ए.एच.पी.एन.डी. पैदा करने वाले बैक्टीरिया मुख्य रूप से पाचन ग्रंथि (हेपेटोपैंक्रियाज) को लक्षित करते हैं और हेपेटोपैन्क्रिएटिक आर (रिसॉर्पि्टव) बी (फफोला) एफ (फाइब्रिलर) और ई (भ्रूण) कोशिकाओं को नुकसान पहुंचाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप झींगा की शिथिलता और बड़े पैमाने पर मृत्यु होती है।

ए.एच.पी.एन.डी. से प्रभावित झींगा सुस्ती, एनोरेक्सिया, धीमी वृद्धि, खाली पाचन तंत्र और पीला से सफेद हेपेटोपैंक्रियाज प्रदर्शित करता है। हालांकि, एएचपीएनडी के लिए ये रिपोर्ट किए गए नैदानिक संकेत कुछ अन्य बीमारियों के लिए आम हैं। उदाहरण के लिए, रासायनिक कारक, उदाहरण, नाइट्राइट और अमोनिया या माध्यमिक बैक्टीरिया (पारंपरिक विब्रियोसिस) और वायरल (व्हाइट स्पॉट सिंड्रोम वायरस, येलो हेड वायरस, आदि) द्वारा प्रेरित सकल संकेत। संक्रमण ए.एच.पी.एन.डी.विकृति का कारण भी बन सकता है। इसलिए, झींगा में ए.एच.पी.एन.डी. के पुष्टिकारक निदान के लिए सकल नैदानिक संकेतों के साथ बैक्टीरियल विषाणु कारक और ए.एच.पी.एन.डी.-विशिष्ट कोशिकीय परिवर्तनों की पहचान को सहायक माना जाता है।

ए.एच.पी.एन.डी.वी. पैराहेमोलिटिकस के कारक एजेंट के रूप में

विब्रियो पैराहेमोलिटिकस झींगा में ए.एच.पी.एन.डी. का कारण बनने वाली प्रमुख प्रजाति है। वी. पैराहाइमोलिटिकस विषमग्रामीय ग्राम-नकारात्मक, गैर-बीजाणु बनाने वाला और अल्पविराम के आकार का बैक्टीरिया है जिसमें ध्रुवीय फ्लैजेलम या कई फ्लैजेला होते हैं। यह रोगजनक ज्वारीय और तटीय वातावरण के ऑटोकथोनस माइक्रोफ्लोरा का हिस्सा है, साथ ही दुनिया भर में उष्णकटिबंधीय से समशीतोष्ण क्षेत्रों में मछली, द्विभुज और क्रस्टेशियन का हिस्सा है। मछली और शेलफिश प्रजातियों (झींगा और मोलस्क सहित) के अलावा इस जीवाणु को पानी, तलछट, प्लैंकटन और समुद्री स्तनधारियों से अलग किया गया है।

पैराहेमोलिटिकस उच्च सोडियम क्लोराइड सांद्रता में पनप सकता है, 0.5 से 10 प्रतिशत तक 1 से 3 प्रतिशत के बीच इष्टतम स्तर के साथ, और मध्यम तापमान (5 से 37 °C) में बढ़ सकता है। झींगा जलीय कृषि में, वी. पैराहेमोलिटिकस एक महत्वपूर्ण जलीय रोगजनक है और कई उपभेद तीव्र हेपेटोपैन्क्रिएटिक नेक्रोसिस रोग (ए.एच.पी.एन.डी.) और अन्य महत्वपूर्ण बीमारी पैदा करने में सक्षम हैं जिसके परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण आर्थिक नुकसान होता है। ए.एच.पी.एन.डी. में संलिप्त वी. पैराहेमोलिटिकस उपभेद पी. वी. ए. 1 प्लास्मिड (70 के. बी.) ले जाने में अद्वितीय हैं जो विषाणु जीन, पी. आर. ए. वी. पी. और पी. आर. बी. वी. पी. को द्विआधारी पी. आर. ए. वी. पी./पी. आर. बी. वी. पी. विषाक्त पदार्थों को कूटबद्ध करते हैं।

ए.एच.पी.एन.डी. के सकल संकेत और हिस्टोपैथोलॉजी

प्राथमिक निदान विधि के रूप में, ए.एच.पी.एन.डी. के नैदानिक संकेतों का उपयोग प्रभावित झींगे की जांच के लिए किया जाता है। ए.एच.पी.एन.डी. से प्रभावित झींगे विशिष्ट रूप से एक पीला और सिकुड़ा हुआ हेपेटोपैंक्रियाज (एच. पी.) और गैस्ट्रिक और आंत खाली होना प्रदर्शित करते हैं। इसके व्यवहार में कुछ बदलाव जैसे सुस्ती, सर्पिल तैरना और कम भोजन भी देखा गया।

रोग के प्रारंभिक से मध्य चरण में एएचपीएनडी की मुख्य और अनूठी ऊतकीय विशेषताएँ हेपेटोपैन्क्रिएटिक ट्यूबुल एपिथेलियल कोशिकाओं का ढलना और बड़े पैमाने पर गोल होना है जिसमें कोई पता लगाने योग्य रोगजनक नहीं है।एएचपीएनडी के प्रारंभिक चरणों में, रोग की विशेषता बी (ब्लिस्टर लाइक) एफ (फाइब्रिलर) और आर (रिसॉर्पि्टव) कोशिकाओं के मध्य से दूरस्थ शिथिलता, प्रमुख कैरिओमेगाली और ई कोशिकाओं में माइटोटिक गतिविधि की कमी है। जबरदस्त द्वितीयक संक्रमण द्वारा वर्णित अंतिम चरणों का मूल्यांकन करना मुश्किल हो सकता है। उदाहरण के लिए, रोग के अंतिम चरणों में हीमोसाइट्स का विशाल एकत्रीकरण और मेलेनाइज्ड ग्रैनुलोमा का उद्भव होता है और ट्यूबुल लुमेन में विभिन्न बैक्टीरिया की कई कॉलोनियों के संक्रमण के साथ होता है। संक्रमित झींगे में इन अभिव्यक्तियों को विभिन्न जीवाणु प्रजातियों के गैर-एएचपीएनडी आइसोलेट्स द्वारा लाए गए गंभीर और अन्य पारंपरिक संक्रमणों से आसानी से अलग नहीं किया जा सकता है।

झींगा में ए.एच.पी.एन.डी. का निदान

झींगा में या कल्चर आवास में वी. पैराहेमोलिटिकस का जल्दी पता लगाने से ए.एच.पी.एन.डी. के प्रकोप को रोका जा सकता है। चूंकि विषाक्त पी. वी. ए. प्लास्मिड जो द्विआधारी पी. आर. ए. बी. विष को आश्रय देता है, पहली बार एक दशक पहले पहचाना गया था और इसकी विशेषता थी, इन दोनों विष जीन का उपयोग ए.एच.पी.एन.डी. निदान के लिए महत्वपूर्ण मार्कर के रूप में किया गया है। प्लास्मिड के साथ-साथ पी. आर. ए. बी. विष का पता लगाने के लिए डिज़ाइन किए गए विशिष्ट प्राइमर या जांच का आमतौर पर उपयोग किया जाता है। व्यावसायिक रूप से उपलब्ध अधिकांश ए.एच.पी.एन.डी. नैदानिक किट पी. सी. आर.-आधारित हैं और या तो पारंपरिक पी. सी. आर., नेस्टेड पी. सी. आर. या रियल-टाइम पी. सी. आर. तकनीकों का उपयोग करते हैं लेकिन इन किटों में समय लगता है और महंगे उपकरणों की आवश्यकता होती है। नैदानिक प्रयोगशालाओं के लिए, शोधकर्ताओं ने हाल ही में ए.एच.पी.एन.डी.का पता लगाने वाली प्रणालियों को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया है जो उच्च-थ्रुपुट और बढ़ी हुई संवेदनशीलता और विशिष्टता के साथ कम समय लेने वाली हैं। उदाहरण के लिए, ए.एच.पी.एन.डी. का आसान, उच्च-थ्रूपुट पता लगाने के लिए पी. आर. ए., पी. आर. बी., झींगा 18 एस और बैक्टीरियल 16 एस जीन को लक्षित करने वाले प्राइमर का उपयोग करते हुए एक मल्टीप्लेक्स रियल-टाइम पी. सी. आर. विकसित किया गया है।

(क्रमशः)

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

समस्या -समाधान

समस्या– गेहूं की पत्तियों पर काला–काला चूर्ण दिखाई दे रहा है। तनों पर भी इसी प्रकार का आक्रमण है कौनसा रोग है, क्या उपाय है।

– विक्रम सिंह

समाधान– *आपके क्षेत्र में कृषि वैज्ञानिकों के द्वारा दूरभाष पर चर्चा होने के बाद हम आपको बता सकते हैं कि गेहूं की पत्तियों पर कंडुआ रोग आया है इसे लोग गेहूं का काला गेरूआ मान रहे थे परंतु काले गेरूए के लक्षण के विपरीत पत्तियों पर काली चूर्ण पत्तियों का कंडुआ ही है। जो एक अर्से के बाद खेतों में दिखाई दिया उसके पौधे रोग के फैलाव के लिये उपयुक्त तापमान एवं आर्द्रता है। गेहूं की बीमारी बंट और पत्तियों का कंडुआ ऐसी बीमारी है जिसकी कवक बीज और भूमि चालित होती है। अर्थात् बीज के द्वारा खेतों में आकर भूमि में लुकी–छिपी रहती है। और वातावरण उपयुक्त होते ही प्रदर्शित हो जाती है। पत्तियों पर छिड़काव से लाभ नहीं होगा आने वाले वर्षों में ये करें–*

- *बीज पूरी तरह बदल दें साथ ही फसल का फेरबदल जरूर करें।*
- *बीज का उपचार वीटावैक्स 2 ग्राम दवा/किलो बीज का करें।*

समस्या– मैंने दो एकड़ में मसूर लगाई थी कटाई के लिये तैयार होने वाली है, इसे काटकर क्या मूंग लगाया जा सकता है। विस्तार से बतायें।

– माखनलाल मौर्य

समाधान– *आपकी मसूर कटने वाली है आपके पास पानी की सुविधा है इसलिये आप सरलता से मूंग लगा सकते हैं और मूंग उत्पादन की तकनीकी का विस्तार से प्रकाशन किया जा चुका है। आप हमारे सदस्य हैं कृपया उक्त लेख को पढ़कर अतिरिक्त जानकारी अवश्य प्राप्त करें। फिलहाल तकनीकी के प्रमुख बिन्दुओं का उल्लेख निम्नानुसार है।*

- *प्रमुख जातियों में के 851, पी.एस.16, पी.एस. 7, पूसा वैशाखी।*
- *बीज का उपचार 3 ग्राम थाईरम प्रति किलो बीज का करे।*
- *40 किलो यूरिया, 250 किलो सिंगल सुपर फास्फेट तथा 30 किलो म्यूरेट ऑफ पोटाश/हे.*
- *फूल आने से पहले और दाना भरते समय सिंचाई आवश्यक है 75 प्रतिशत फल्लियां बन जाने के बाद सिंचाई नहीं करें। पहली सिंचाई बुआई के 15 दिनों बाद करें।*

समस्या– चने की घेटी आने लगी है कहीं–कहीं इल्ली का प्रकोप देखा है। उपाय बतायें।

– अमरनाथ वर्मा

समाधान– *आपने चने की बुआई में देरी कर दी होगी। घेटी की अवस्था में इल्ली के*

आक्रमण से नुकसान संभव है आप शीघ्र ही निम्न उपचार करें।

- *कीटनाशी क्विनालफास 25 ई.सी. जो एक संपर्क एवं दैहिक कीटनाशक है। 1 ली./500 लीटर पानी में घोल बनाकर 10 दिनों के अंतर से दो छिड़काव करें।*
- *अथवा प्रोफेनोफॉस 50 ई.सी. कीटनाशक जो अंड संपर्क एवं उदरनाशी है की 1.5 लीटर मात्रा 500–600 लीटर पानी में घोल बनाकर 10 दिनों के अंतर से दो छिड़काव करें।*
- *यदि खेत में T आकार की खूटियां नहीं लगाई हो तो तुरंत लगाये ताकि इल्ली के जीवनचक्र में बाधा पहुंच सकें।*

समस्या– चूहों को मारने की दवा एवं कल्चरल उपाय बतायें।

– छोटे लाल राय, कुदुलिया

समाधान– *चूहा और दीमक दोनों सामाजिक त्रासदी है। जिनका असर खेती तथा घरों तक होता है। चूहा एक बहुत ही चालाक और सतर्क प्राणी होता है। उसको नियंत्रण में रखने के लिये छल/प्रपंच करना होता है।*

- *खेत में जगह–जगह घूम कर चूहों के सक्रिय बिलों का सर्वेक्षण करें।*
- *फूले चने, मुरमुरे इत्यादि को रोज बिल के आसपास दो दिनों तक डालकर चूहों के लिये आकर्षण पैदा करें ।*
- *अच्छा स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ देने के बाद 4 दिन बाद जिंक फास्फेट 2.5 ग्राम को 100 ग्राम आटे में मिलायें। उसमें तेल तथा गुड़ भी डालें। स्वादिष्ट गोलियों को सक्रिय बिलों के पास रखें।*

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान

कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.) फोन-0755-4248100,2554864

प्राकृतिक खेती - अक्सर पूछे जाने वाले सवाल

रिसोर्स और सपोर्ट

मुझे भारत में प्राकृतिक खेती पर प्रशिक्षण और शिक्षण संसाधन कहाँ मिल सकते हैं?

लोकल कृषि विस्तार सेवा, सरकारी प्रोग्राम, एनजीओ, और प्राकृतिक खेती पर केन्द्रित करने वाले ऑनलाइन कोर्स और फोरम से ट्रेनिंग लें।

क्या कोई सरकारी पहल या प्रोग्राम हैं जो प्राकृतिक खेती को सपोर्ट करते हैं?

हाँ, परंपरागत कृषि विकास योजना (RKVY) और राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (RKVY) जैसी सरकारी पहल प्राकृतिक खेती के तरीकों के लिए सपोर्ट देती हैं।

क्या मैं सहायता और नेटवर्किंग के लिए किसी स्थानीय प्राकृतिक खेती को-ऑपरेटिव या एसोसिएशन से जुड़ सकता हूँ?

हाँ, लोकल को-ऑपरेटिव या एसोसिएशन से जुड़ने से कीमती सहयोग, ज्ञान साझा और आदानों तक पहुँच मिल सकती है।

प्राकृतिक खेती करने वाले भारतीय किसानों के लिए कौन से ऑनलाइन फोरम या कम्युनिटी उपलब्ध हैं?

सोशल मीडिया ग्रुप, फोरम और प्राकृतिक खेती के लिए समर्पित वेबसाइट जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म आपको मार्गदर्शन और सहयोग के लिए एक जैसी सोच वाले किसानों और एक्सपर्ट से जोड़ सकते हैं।

बायोडायवर्सिटी या जैव विविधता क्या है?

जैव विविधता या बायोडायवर्सिटी का मतलब है किसी इकोसिस्टम में रहने वाले पौधों, जानवरों और दूसरे जीवों की संख्या और वैरायटी।

किसानों के लिए बायोडायवर्सिटी की समझ क्यों ज़रूरी है?

बायोडायवर्सिटी किसानों को यह समझने में मदद करती है कि इकोसिस्टम में अलग-अलग स्पीशीज़ एक-दूसरे के साथ कैसे इंटरैक्ट करती हैं। यह जानकारी हमें यह समझने में मदद कर सकती है कि हम अपनी ज़मीन को बेहतर तरीके से कैसे मैनेज कर सकते हैं ताकि हम आने वाली पीढ़ियों के लिए अपनी फ़ूड सप्लाई को सस्टेनेबल तरीके से बढ़ा सकें।

प्राकृतिक फ़ार्मिंग बायोडायवर्सिटी बनाए रखने में कैसे मदद करती है?

प्राकृतिक फ़ार्मिंग में नुकसानदायक केमिकल फ़र्टिलाइज़र का इस्तेमाल नहीं होता, और यह मिट्टी में जैविक मैटर बढ़ाने पर केन्द्रित रहती है। स्वस्थ मिट्टी फ़ायदेमंद माइक्रोब्स, केंचुओं वगैरह जैसी ज़्यादा बायोडायवर्सिटी को सहयोग करती है। यह फ़ायदेमंद कीड़ों/पक्षियों/परागण की आबादी बनाए रखने में मदद करती है।

कृषक जगत बागवानी सीरीज

साग-सब्जी उत्पादन उन्नत तकनीक रु. 95 कोड : 016
सब्जियों में पौध संरक्षण रु. 75 कोड : 017
मशरूम एक लाभ अनेक रु. 45 कोड : 019
मिर्च की उन्नत खेती रु. 55 कोड : 020
केला उत्पादन रु. 70 कोड : 025
गुलाब बहुरंगी संशोधित संस्करण रु. 75 कोड : 027
पपीता रु. 55 कोड : 031
अदरक रु. 55 कोड : 032
फलों की खेती रु. 75 कोड : 040
सजाएं फूलों से बगिया रु. 65 कोड : 041
घर की बगिया रु. 95 कोड : 050

डाक द्वारा मंगवाने हेतु निम्नलिखित जानकारी के साथ हमारे पते पर ड्राफ्ट/मनीऑर्डर के साथ ऑर्डर कीजिए . किताब कोड नं. पर ✔ निशान लगाएं

016 ☐ 017 ☐ 019 ☐ 020 ☐ 025 ☐ 027 ☐ 031 ☐ 032 ☐ 034 ☐ 040 ☐ 041 ☐ 050 ☐

नाम _____
ग्राम _____ पोस्ट _____ तह. _____
जिला _____ फोन/मोबा. _____
कुल राशि _____ ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या _____
संलग्न ड्राफ्ट नं. _____ मनी आर्डर रसीद क्र. _____ वी.पी. भेजें ☐

संस्थाओं द्वारा अधिक संख्या में प्रतियां खरीदने पर आकर्षक छूट. अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें.

कृपया ड्राफ्ट या मनीआर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम
14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल - 462011
फोन : 0755-4248100, 2554864, मो.: 9826255861, Email-info@krishakjagat.org
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास, इंदौर (म.प्र.) मो. : 9826021837

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

स्वास्थ्य

फल जो हैं स्वास्थ्यवर्द्धक

फल एक ऐसा हेल्दी स्नैक है जिसे कभी भी खाया जा सकता है। प्रतिदिन फल खाने से कई बीमारियों के होने की आशंका कम होती है। फल तो सब खाते हैं पर कौन सा फल फायदेमंद होता है हममें से कितने जानते हैं? अगर आपके साथ भी ऐसा ही है तो जानिए कुछ फलों के बारे में खास बातें।

सेब

डॉक्टरों का मानना है कि एक सेब प्रतिदिन खाने से कई एक फायदे मिलते हैं। सेब विटामिन ए व सी से भरपूर फल है। इसमें कार्बोहाइट्रेड व सेल्यूलोज भी होता है। इसलिए सेब के सेवन से अल्परक्तता, तेज बुखार, कमजोरी, निराशा, आर्थराइटिस, मुंहासे व रक्त की अशुद्धियां जैसी समस्याएं दूर होती हैं तथा क्षीण जीवनशक्ति के उपचार में मदद मिलती है।

आम

फलों का राजा कहा जाने वाला आम आपके स्वास्थ्य के लिए बहुत ही फायदेमंद होता है। यह अपच, कब्ज और एसिडिटी जैसी समस्याओं को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। फाइबर से भरपूर आम मल त्याग और चयापचय दर को बढ़ाने में मदद करता है।

तरबूज

तरबूज आकर्षक और स्वास्थ्य वर्द्धक फल है। तरबूज खाना इसलिए आवश्यक है, क्योंकि यह शरीर में पानी की कमी को पूरा करता है। हमें वही फल ज्यादा खाने चाहिए जो शरीर में पानी की आपूर्ति भी करते रहें। तरबूज रक्ताचाप को संतुलित रखता है और कई बीमारियां दूर करता है। इसके और भी फायदे हैं जैसे खाना खाने के उपरांत तरबूज का रस पीने से भोजन शीघ्र पच जाता है। मोटापा कम करने वालों के लिए यह उत्तम आहार है।

संतरा

संतरा विटामिन सी से परिपूर्ण होता है, जिससे हमारे शरीर का प्रतिरक्षातंत्र मजबूत बनता है और बाहर से आने वाली बीमारियों से हमारे शरीर की रक्षा करता है। सर्दी, जुकाम, खांसी होने पर संतरे का सेवन लाभप्रद होता है।

अनार

अनार पतले पारदर्शी लाल रंग के रसीले दानों का फल है। इसमें साइट्रिक अम्ल के साथ विटामिन बी व सी होता है। अनार में एंटी आक्सीडेंट विशेषता होने के कारण यह खराब कोलेस्ट्रॉल को शुरुआती अवस्था में ही रोक देता है। अनार का जूस खून को पतला बनाने की विशेषता भी रखता है जिससे खून के थक्के नहीं बनते।

चीकू

चीकू एक ऐसा फल है जो हर मौसम में आसानी से मिल जाता है और बहुत स्वादिष्ट भी होता है। चीकू के फल में 71 प्रतिशत पानी, 1.5 प्रतिशत प्रोटीन, 1.5 प्रतिशत चर्बी और साढ़े पच्चीस प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट होता है। इसमे विटामिन ए तथा विटामिन सी की अच्छी मात्रा होती है।

पपीता

पपीता सेहत के लिए बहुत ही फायदेमंद होता है। जहां इससे पेट संबंधी परेशानियां दूर होती हैं, वहीं त्वचा भी काफी अच्छी हो जाती है। जिन लोगों को किडनी की तकलीफ होती है उन्हें रोज पपीता खाना चाहिए। पपीता खाने से आंखों की रोशनी भी अच्छी बनी रहती है। अगर पेट में कीड़े हों, तो कच्चे पपीते का जूस फायदा करता है।

कैसे लगाएं पारिवारिक सदस्यों के फोटो

- तीन व्यक्तियों की एक सीध में एकाकी फोटो हो तो घर में न रखें।
- फोटो कभी भी टांगें नहीं।
- अगर दीवार पर फोटो लगानी हो तो उसके नीचे एक लकड़ी की पट्टी लगाएं अर्थात् वह फोटो लकड़ी के पट्टे पर टिके।
- फोटो का मुख बाथरूम की ओर न हो।
- प्रमुख द्वार की ओर कदापि न हो।
- सीढ़ियों की ओर न दिखे।
- तलघर में कभी भी परिवार के सदस्यों की अथवा ईश्वर की फोटो न लगाएं।

खेल, नृत्य और तैरना फायदेमंद

फिटनेस के लिए फुटबॉल और वॉलीबॉल के दो गेम पर्याप्त हैं। दोनों खेलों के लिए पूरी टीम हो, जरूरी नहीं है। शौक के तौर पर आधी टीम से भी इन्हें खेला जा सकता है। बैडमिंटन भी एक जबरदस्त कसरत है। इसके अलावा डांसिंग यानी एरोबिक्स भी एक तरह की कसरत ही है। इससे दिल और फेफड़े मजबूत हो जाते हैं। साथ ही शारीरिक संतुलन भी सुधर जाता है। आप जितनी मर्जी हो, उतने समय तक डांस कर सकते हैं।

कहा जाता है कि तैरने और घुड़सवारी से बड़ी कोई कसरत नहीं होती, जिसमें शरीर के हर हिस्से का इस्तेमाल किया जाता है। तैराकी शुरू करने में उतना भी खर्च नहीं करना पड़ता, जितना दौड़ने के जूते खरीदने में हो सकता है। दरअसल तैराकी के लिए आपको सिर्फ एक बढ़िया स्वीमिंग–कॉस्ट्यूम की जरूरत होती है।

यदि आप किसी नदी या तालाब में तैराकी करते हैं तो इससे अच्छा विकल्प नहीं है।

स्वास्थ्य/शिक्षण

डायबिटीज के लिए सरल देशी नुस्खे

डायबिटीज अब उम्र, देश व परिस्थिति की सीमाओं को लांघ चुका है। इसके मरीजों का तेजी से बढ़ता आंकड़ा दुनियाभर में चिंता का विषय बन चुका है। जानते हैं कुछ देशी नुस्खे मधुमेह रोगियों के लिए–

नीबू

मधुमेह के मरीज को प्यास अधिक लगती है। अतः बार–बार प्यास लगने की अवस्था में नीबू निचोड़कर पीने से प्यास की अधिकता शांत होती है।

खीरा

मधुमेह के मरीजों को भूख से थोड़ा कम तथा हल्का भोजन लेने की सलाह दी जाती है। ऐसे में बार–बार भूख महसूस होती है। इस स्थिति में खीरा खाकर भूख मिटाना चाहिए।

गाजर–पालक

इन रोगियों को गाजर–पालक का रस मिलाकर पीना चाहिए। इससे आंखों की कमजोरी दूर होती है।

शलजम

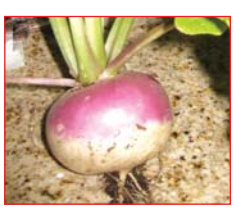

मधुमेह के रोगी को तरोई, लौकी, परवल, पालक, पपीता आदि का प्रयोग ज्यादा करना चाहिए। शलजम के प्रयोग से भी रक्त में स्थित शर्करा की मात्रा कम होने लगती है। अतः शलजम की सब्जी, पराठे, सलाद आदि चीजें स्वाद बदल–बदलकर ले सकते हैं।

जामुन

मधुमेह के उपचार में जामुन एक औषधि है। जामुन की गुठली, छाल, रस और गूदा सभी मधुमेह में बेहद फायदेमंद हैं। जामुन के बीजों में जाम्बोलिन नामक तत्व पाया जाता है, जो स्टार्च को शर्करा में बदलने से रोकता है। गुठली का बारीक चूर्ण बनाकर रख लेना चाहिए। दिन में दो–तीन बार, तीन ग्राम की मात्रा में पानी के साथ सेवन करने से मूत्र में शुगर कम होती है।

करेले

प्राचीन काल से करेले को मधुमेह की औषधि के रूप में इस्तेमाल किया जाता रहा है। इसका कड़वा रस शुगर की मात्रा कम करता है। मधुमेह के रोगी को इसका रस रोज पीना चाहिए। इससे आश्चर्यजनक लाभ मिलता है।

मैथी

मधुमेह के उपचार के लिए मैथीदाने के प्रयोग का भी बहुत चर्चा है। दवा कंपनियां मैथी के पावडर को बाजार तक ले आई हैं। इससे पुराना मधुमेह भी ठीक हो जाता है। मैथीदानों का चूर्ण बनाकर रख लीजिए। नित्य प्रातः खाली पेट दो टी–स्पून चूर्ण पानी के साथ निगल लीजिए। कुछ दिनों में आप इसकी अद्भुत क्षमता देखकर चकित रह जाएंगे।

गेहूं के जवारे

गेहूं के पौधों में रोगनाशक गुण विद्यमान हैं। गेहूं के छोटे–छोटे पौधों का रस असाध्य बीमारियों को भी जड़ से मिटा डालता है। इसका रस मनुष्य के रक्त से चालीस फीसदी मेल खाता है। इसे ग्रीन ब्लड के नाम से पुकारा जाता है। जवारे का ताजा रस निकालकर आधा कप रोगी को तत्काल पिला दीजिए।

पाक्षिक पंचांग

2 फरवरी से 15 फरवरी 2026 तक
विक्रम संवत् 2082
फाल्गुन कृष्ण 1 से फाल्गुन कृष्ण 13 तक

दि.	माह	वार		तिथि/त्यौहार
2	फरवरी	सोम	फाल्गुन कृष्ण	1
3	फरवरी	मंगल	----------	2
4	फरवरी	बुध	----------	3
5	फरवरी	गुरु	----------	4 गणेश चतुर्थी व्रत
6	फरवरी	शुक्र	----------	5
7	फरवरी	शनि	----------	6
8	फरवरी	रवि	----------	7
9	फरवरी	सोम	----------	8
10	फरवरी	मंगल	----------	8
11	फरवरी	बुध	----------	9
12	फरवरी	गुरु	----------	10
13	फरवरी	शुक्र	----------	11 विजया एकादशी
14	फरवरी	शनि	----------	12 प्रदोष व्रत
15	फरवरी	रवि	----------	13 महाशिवरात्रि

एनआईबीएसएम रायपुर में शीतकालीन प्रशिक्षण

रायपुर। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आई.सी.ए.आर.) द्वारा प्रायोजित 'फसलों में राष्ट्रीय महत्व के कीट एवं रोगजनकों के प्रबंधन हेतु उभरती जैव-प्रौद्योगिकीय एवं बायोरेशनल हस्तक्षेप' विषय पर आधारित 21-दिवसीय शीतकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आई.सी.ए.आर.- राष्ट्रीय जैविक तनाव प्रबंधन संस्थान (एन.आई.बी.एस.एम.), रायपुर में सफलतापूर्वक शुभारंभ किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. सच्चिदानंद शुक्ला, माननीय कुलपति, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर ने उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए शीतकालीन विद्यालय जैसे उन्मुखीकरण एवं क्षमता संवर्धन कार्यक्रमों के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बदलती कृषि पारिस्थितिकी परिस्थितियों में फसलों के पादप संरक्षण हेतु उभरती जैव-प्रौद्योगिकीय एवं बायोरेशनल तकनीकों की बढ़ती उपयोगिता पर बल दिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. पी. के. राय, निदेशक, आई.सी.ए.आर. - एन.आई.बी.एस.एम., रायपुर ने की। अपने अध्यक्षीय संबोधन में उन्होंने एकीकृत कीट प्रबंधन की आवश्यकता पर जोर देते हुए रासायनिक कीटनाशकों पर निर्भरता कम करने तथा जैव-नियंत्रण आधारित उपायों को अपनाने की आवश्यकता रेखांकित की। उन्होंने फसलों में जैविक तनावों के प्रभावी प्रबंधन को टिकाऊ कृषि के लिए अनिवार्य बताया।

डॉ. अनिल दीक्षित, संयुक्त निदेशक, आई.सी.ए.आर. - एन.आई.बी.एस.एम., रायपुर एवं कोर्स डायरेक्टर ने शीतकालीन विद्यालय प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा एवं उद्देश्यों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यह कार्यक्रम युवा वैज्ञानिकों की वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षमताओं को अद्यतन एवं सुदृढ़ करने हेतु एक महत्वपूर्ण क्षमता संवर्धन पहल है, जिसमें विशेषज्ञ व्याख्यान, संवादात्मक सत्र, व्यावहारिक प्रदर्शन तथा क्षेत्र भ्रमण का संतुलित समावेश किया गया है।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के पाठ्यक्रम समन्वयक डॉ. श्रीधर जे. एवं डॉ. एस. के. शर्मा हैं। इस 24-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश के 4। राज्यों के विभिन्न आई.सी.ए.आर. संस्थानों एवं राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के कुल 25 प्रतिभागी इस शीतकालीन विद्यालय में भाग ले रहे हैं ।

राष्ट्रीय बागवानी मिशन से बदली खेती की तस्वीर

रायपुर। उद्यानिकी विभाग अंतर्गत संचालित राष्ट्रीय बागवानी मिशन मुंगेली जिले के किसानों के लिए आयवर्धन का प्रभावी माध्यम सिद्ध हो रहा है। इसी कड़ी में ग्राम बरेला के किसान श्री चंद्रेश पटेल ने आधुनिक तकनीक को अपनाकर खेती की पारंपरिक तस्वीर बदल दी है और अपनी वार्षिक आय में उल्लेखनीय वृद्धि की है।

श्री पटेल पूर्व में पारंपरिक कृषि पद्धति से खेती करते थे, जिससे उन्हें प्रतिवर्ष लगभग 1.50 से 2.00 लाख रुपये की आय प्राप्त होती थी। सीमित उत्पादन, फसलों में रोगों की समस्या तथा बाजार जोखिम के कारण आय में अपेक्षित बढ़ोतरी नहीं हो पा रही थी। इस स्थिति में उन्होंने उद्यानिकी विभाग के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय बागवानी मिशन से जुड़कर ग्राफ्टेड पौधा आधारित बागवानी को अपनाने का निर्णय लिया।

योजना के अंतर्गत उन्हें उन्नत किस्मों के ग्राफ्टेड पौधे, तकनीकी प्रशिक्षण तथा समय-समय पर विभागीय मार्गदर्शन उपलब्ध कराया गया। वैज्ञानिक पद्धति से की गई बागवानी में पौधों की जीवित रहने की दर अधिक रही, रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि हुई तथा उत्पादन की गुणवत्ता में भी सुधार हुआ। इसके सकारात्मक परिणाम स्वरूप आज श्री पटेल की वार्षिक आय बढ़कर 5 से 6 लाख रुपये तक पहुँच गई है, जो पूर्व की तुलना में लगभग तीन गुना है। इससे न केवल उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई है, बल्कि परिवार का जीवन स्तर भी बेहतर हुआ है।

श्री पटेल का कहना है कि यदि किसान पारंपरिक सोच से आगे बढ़कर शासकीय योजनाओं और आधुनिक तकनीकों को अपनाएं, तो खेती निश्चित रूप से लाभकारी बन सकती है।

कृषक जगत जिला प्रतिनिधि

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता, विज्ञापन, समाचार, कृषि पुस्तकें एवं कृषि डायरी हेतु संपर्क करें-

उत्तम कुमार देशमुख
(जिला प्रतिनिधि)
नावेल्टी न्यूज एजेंसी
ग्राम निकुंम, जिला दुर्ग (छ.ग.)
मो. : 8236059865

कृषक जगत जिला प्रतिनिधि

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता, छोटे-बड़े विज्ञापन, कृषि समाचार, कृषि लेख, कृषि पुस्तकें एवं कृषि डायरी हेतु संपर्क करें-

बलभद्र शर्मा
डागा चौक वार्ड नं. 10, खरियार रोड, नुआपाड़ा (उड़ीसा)
पिन नं. 766104
मो. : 6371774361

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

व्यक्तिगत क्लासीफाइड

विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-
- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि
- बीज ▪ औषधीय फसल

विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक
- अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड

विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण
साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.

कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्रायें, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
(सोमवार से शनिवार प्रातः 9 बजे से शाम 7 बजे तक)
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagat
@krishakjagatindia @krishak_jagat

78 वर्ष
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
⇨ वार्षिक रु. 600/- ⇨ दो वर्ष रु. 1000/-
⇨ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से **'कृषक जगत'** – प्रति सप्ताह ☐ भोपाल ☐ जयपुर ☐ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).

नाम .....
.....
ग्राम .....पो. .....
डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : .....
वि.ख. ..... तह. .....
जिला ..... पिन ☐☐☐☐☐☐ राज्य .....
शिक्षा ..... भूमि ..... उम्र .....
ट्रैक्टर/मॉडल ..... फोन/मो. .....
ई-मेल .....
मेरा सदस्यता शुल्क रुपये ..... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/
मनीऑर्डर/क्र. ..... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम
कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php
Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793, Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861
कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
प्रसार प्रबंधक कृषक जगत

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.),मो.: 9826255862
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403,आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें

आर्थिक समीक्षा में कृषि की उजली तस्वीर!

● मधुकर पवार,मो.: 8770218785

आर्थिक समीक्षा में कृषि क्षेत्र के आंकड़े उत्साहजनक हैं। पिछले पांच वर्षों में कृषि एवं सहयोगी क्षेत्रों की औसत वार्षिक विकास दर 4.4 प्रतिशत रही है। वित्त वर्ष 2025-26 की दूसरी तिमाही में कृषि क्षेत्र की वृद्धि दर 3.5 प्रतिशत दर्ज की गई। दशकीय (2016-25) औसत वृद्धि दर 4.45 प्रतिशत रही, जो पिछले दशकों में सबसे अधिक है। यह वृद्धि मुख्य रूप से पशुधन (7.1 प्रतिशत) और मत्स्य पालन (8.8 प्रतिशत) जैसे सहयोगी क्षेत्रों के मजबूत प्रदर्शन से संभव हुई है।

देश में खाद्यान्न उत्पादन भी लगातार बढ़ा है। वर्ष 2024-25 में खाद्यान्न उत्पादन 3,577.3 लाख मीट्रिक टन तक पहुंचने का अनुमान है, जो पिछले वर्ष से 254.3 लाख मीट्रिक टन अधिक है। चावल, गेहूं, मक्का और मोटे अनाजों की बेहतर उपज इसका मुख्य कारण रहा है। बागवानी क्षेत्र, जो कृषि सकल मूल्य वर्धन में 33 प्रतिशत योगदान देता है, 2024-25 में 362 मिलियन टन से अधिक उत्पादन के साथ खाद्यान्न उत्पादन से आगे निकल गया। भारत आज विश्व का सबसे बड़ा प्याज उत्पादक और फल-सब्जियों का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश बन चुका है।

उत्पादकता बढ़ाने के लिए सरकार ने बीज, सिंचाई, मृदा स्वास्थ्य, यंत्रीकरण और विपणन अवसंरचना पर विशेष ध्यान दिया है। 6.85 लाख बीज ग्राम, 25.55 करोड़ मृदा स्वास्थ्य कार्ड, 25,689 कस्टम हायरिंग सेंटर, ई-नाम पर 1.79 करोड़ किसानों का पंजीकरण और 10 हजार एफपीओ का गठन-ये सभी तथ्य बताते हैं कि कृषि को एक संगठित और बाजारोन्मुख क्षेत्र बनाने की कोशिश जारी है।

केंद्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट कार्य मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण द्वारा गत 29 जनवरी को संसद में प्रस्तुत की गई आर्थिक समीक्षा 2025-26 से यह स्पष्ट हुआ है कि भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूती में कृषि और ग्रामीण भारत की भूमिका बरकरार है। आर्थिक समीक्षा में कृषि उत्पादन और सहयोगी क्षेत्रों की प्रगति को दर्शाते हुए बताया गया है कि बीते वर्षों में बुनियादी ढांचे, तकनीक और नीति सुधारों ने गांवों की तस्वीर को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मूल्य और आय समर्थन के तहत एमएसपी, पीएम-किसान और कृषि ऋण योजनाओं ने किसानों को स्थिरता दी है। पीएम-किसान के तहत अब तक 4.09 लाख करोड़ रुपये सीधे किसानों के खातों में पहुंचाए गए हैं, जबकि वित्त वर्ष 2025 में कृषि ऋण वितरण 28.69 लाख करोड़ रुपये रहा।

पशुधन क्षेत्र ने 2015 से 2024 के बीच उल्लेखनीय प्रगति की है। इसके सकल मूल्य वर्धन में लगभग 195 प्रतिशत की वृद्धि हुई और 12.77 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर दर्ज की गई। मत्स्य पालन क्षेत्र में 2014-25 के दौरान मछली उत्पादन में 140 प्रतिशत से अधिक वृद्धि हुई।

आर्थिक समीक्षा का पहला मजबूत पक्ष ग्रामीण आधारभूत ढांचे का विस्तार है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (पीएमजीएसवाई) के तहत 25 दिसंबर 2000 को शुरू की गई पहल ने ग्रामीण संपर्क में क्रांतिकारी बदलाव किया है। 15 जनवरी 2026 तक 99.6 प्रतिशत पात्र बसावटों को ऑल-वेदर सड़क सुविधा उपलब्ध कराई जा चुकी है।

ग्रामीण जीवन की गुणवत्ता सुधारने में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) की भूमिका भी अहम रही है। योजना के तहत 2029 तक 4.95 करोड़ पक्के मकान उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखा गया है।

जल जीवन मिशन ने 'हर घर जल' के लक्ष्य को वास्तविकता के करीब पहुंचाया है। अगस्त 2019 में योजना की शुरुआत के समय केवल 17 प्रतिशत ग्रामीण घरों में नल से स्वच्छ पेयजल उपलब्ध था। 20 नवंबर 2025 तक यह आंकड़ा बढ़कर 81.30 प्रतिशत यानी 15.74 करोड़ ग्रामीण घरों तक पहुंच गया।

आर्थिक समीक्षा 2025-26 कृषि और ग्रामीण भारत की एक तथ्यपरक और आशावादी तस्वीर पेश करती है। लेकिन धरातल पर तस्वीर कुछ और ही है। किसानों को न तो समय पर खाद मिलती है और न ही पर्याप्त बिजली। नकली खाद और बीज से भी किसानों की उम्मीदों पर तुषारापात हो जाता है। सबसे ज्यादा तकलीफ तो तब होती है जब किसान न्यूनतम समर्थन मूल्य अपनी उपज को बेचने के लिए तरस जाते हैं जबकि सरकार भी जानती है कि न्यूनतम समर्थन मूल्य नहीं मिलने पर किसानों की लागत की भी भरपाई नहीं हो पाती है। अब उम्मीद यह है कि इन उपलब्धियों के साथ किसानों की ज्वलंत समस्याओं जैसे खाद और बिजली की समय पर उपलब्धता, न्यूनतम समर्थन मूल्य पर कृषि उपज की बिक्री, लागत कम करने के उपाय, फसल बीमा के तहत मुआवजा का सही आकलन और शीघ्र भुगतान तथा प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के तहत सहायता राशि को बढ़ाने पर गम्भीरता से विचार कर कार्यान्वयन करना चाहिए। सरकार द्वारा किए जा रहे कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए पर्याप्त संसाधन, जलवायु-संवेदनशील नीतियाँ और बाजार सुधारों को प्राथमिकता देना होगा। यदि ऐसा होता है, तो कृषि न केवल 'विकसित भारत' के लक्ष्य की धुरी बनेगी, बल्कि करोड़ों ग्रामीण परिवारों के जीवन में स्थायी सुधार का आधार सिद्ध होगी।

'वीबी-जी राम जी' में

60 दिन कृषि के लिए, किसको होगा लाभ ?

● राजेश दुबे

कृषि में श्रम की उपलब्धता सुनिश्चित होगी

हाल ही में समाप्त हुए वर्ष 2025 के अंतिम दिनों में केंद्र सरकार ने अपने महत्वाकांक्षी विधेयक 'वीबी-जी राम जी' को विधिवत लागू करने सफलता पाई है। इस विधेयक को लेकर राजनीतिक गलियारों में काफी हलचल रही और इसके लाभ और नुकसान को लेकर केंद्र को विरोध और चिंताओं का सामना करना पड़ा, जो अभी भी जारी है। महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा) के स्थान पर कुछ संशोधन के बाद लागू की जा रही इस योजना के समर्थन में केंद्र सरकार का एक दावा यह भी है कि इससे कृषि में श्रम की उपलब्धता सुनिश्चित होगी। क्योंकि इस योजना के अंतर्गत कृषि के बुआई और कटाई के मौसम में 60 दिनों तक कोई काम नहीं किया जायेगा। जिसके कारण इस दौरान किसानों को कृषि कार्यों के लिए श्रमिकों की उपलब्धता सुगमता से हो सकेगी। इस तरह कृषि क्षेत्र में उत्पन्न हो रहे श्रम संकट से निपटने में आसानी होगी। इन 60 दिनों में योजना के तहत कोई भी सार्वजानिक निर्माण कार्य नहीं होंगे।

श्रम की 60 दिनों की अवधि

राज्य सरकारें अपने कृषि जलवायु क्षेत्र, स्थानीय फसल चक्र और कृषि श्रम की आवश्यकता के अनुसार 60 दिनों की अवधि को अग्रिम रूप से अधिसूचित करेंगी। जो जिलों, ब्लॉक और ग्राम पंचायतों के अनुसार भिन्न भी हो सकती है। राज्य सरकार के अधिकारियों को कार्य योजना बनाने, मंजूरी देने और क्रियान्वयन के समय इस अधिसूचित अवधि को विशेष रूप से ध्यान में रखना होगा।

कृषि श्रमिकों की आवश्यकता बनी रहती है

केंद्र सरकार ने केवल कुछ रिपोर्ट के आधार पर पूरे वर्ष में केवल 60 दिनों को ही कृषि कार्य की चरम परिस्थिति माना है जबकि सामान्य रूप से भी देखा जाये तो भारतीय कृषि में रबी और खरीफ दो मुख्य सीजन माने जाते हैं, अर्थात् चार बार तो बुआई और कटाई की ही परिस्थितियां बनती हैं। इसके अलावा भी कई कृषि कार्यों जैसे सिंचाई, निंदाई, खाद देने, दवाई देने आदि कार्यों के लिए भी कृषि श्रमिकों की आवश्यकता होती है। यहाँ ये भी उल्लेखनीय होगा कि आधुनिक कृषि में तो अब लगभग पूरे वर्ष फसल चक्र चलता रहता है, जिसके लिए निरंतर कृषि श्रमिकों की आवश्यकता बनी रहती है। ऐसे में 60 दिन की बंदिश की व्यवस्था योजना के समर्थन में केंद्र सरकार की जुमले बाजी ही लगती है। इसका दूसरा पहलू देखें तो कृषि में बढ़ते मशीनीकरण के फलस्वरूप कृषि कार्यों में लगे श्रमिकों के लिए रोजगार के अवसर कम होते जा रहे हैं। केंद्र सरकार ही कृषि मशीनीकरण को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं चला रही है। जिसका लाभ लेते हुए किसान श्रमिकों पर अपनी निर्भरता को कम कर रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना इन श्रमिकों के लिए राहत का काम करती है। लेकिन 60 दिन की बंदिश एक ओर तो उन्हें राहत से वंचित करेगी वहीं कृषि की चरम परिस्थितियों में उनकी उचित श्रमिक दर को भी प्रभावित करेगी। इसका मतलब श्रमिकों के लिए 'एक तो दुबले,ऊपर से दो आषाढ़' जैसी स्थिति निर्मित हो जाएगी। दो दशकों से चल रही मनरेगा योजना को कुछ नए प्रावधानों और नए नाम विकसित भारत - रोजगार और आजीविका मिशन (ग्रामीण) (VB-G RAM G) के साथ प्रस्तुत करने का केंद्र सरकार यह दांव किसान, कृषि और श्रमिक में से किसके लिए कितना लाभकारी होगा, यह तो आने वाले समय में ही पता चलेगा।

- 'मनरेगा' की जगह 'वीबी-जी राम जी'
- 100 की जगह 125 दिन की रोजगार गारंटी
- योजना में 60 दिन कृषि कार्य बंद

मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने गणतंत्र दिवस पर बिलासपुर में ध्वजारोहण कर परेड की सलामी ली।

विगत दिनों कुम्हारी दुर्ग में आयोजित किसान मेले में एग्रोसेल इंडस्ट्रीज प्रा.लि. के स्टॉल पर किसानों को कंपनी के उत्पादों की जानकारी देते हुए स्टेट हेड डॉ. स्वामीनाथ गुप्ता। इस मौके पर सेल्स ऑफीसर श्री तरेन्द्र साहू तथा कंपनी के श्री सोमेश्वर यादव, श्री शुभम रावत, श्री निलेश ठाकरे और श्री राकेश ठाकरे उपस्थित थे।

इफको ने दिव्यांगों को बांटे निःशुल्क कंबल

राजिम। इफको द्वारा, सक्षम दिव्यांग आवासीय विद्यालय, राजिम (जिला गरियाबंद) में एक सामाजिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमे निःशुल्क कंबल का वितरण विद्यालय के दिव्यांग बच्चों को किया गया।

शीतलहर को देखते हुए, इस पहल का उद्देश्य दिव्यांग बच्चों को शीतकालीन कठिनाइयों से बचाना और उन्हें गरम कपड़ों के माध्यम से सहारा देना था। कार्यक्रम में राजिम शाखा से पर्यवेक्षक श्री कोमलराम साहू एवं ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी श्रीमती श्वेता साहू उपस्थित रहे। 35 दिव्यांग बच्चों को निःशुल्क कंबल इफको द्वारा वितरित किए गए। कार्यक्रम के दौरान सामाजिक सौहार्द्र और सेवा भाव का वातावरण बना रहा एवं बच्चों में खुशी और उत्साह का माहौल रहा।

इस सामाजिक सेवा कार्य के माध्यम से बच्चों को गर्म कपड़े प्रदान कर उनकी देखभाल और सामाजिक सहयोग का संदेश दिया गया। कार्यक्रम का संचालन इफको के क्षेत्रीय अधिकारी साजिद राजा द्वारा किया गया।